



यूरोपियन  
टेक्नोलॉजी

NEW HOLLAND

न्यू हॉलैंड धमाका ऑफर

ट्रैक्टर आज लीजिए और  
किश्त दीजिए 2025 में\*

CNH | CAPITAL के सौजन्य से



अधिक जानकारी के लिए मिस्ड कॉल करें - 7412063607

न्यू हॉलैंड की डीलरशिप लेने के लिए संपर्क करें: [newhollandindia@cnhind.com](mailto:newhollandindia@cnhind.com) / टोल फ्री नं. 1800-419-0124Visit us at: [www.newholland.com/in](http://www.newholland.com/in)\*यह ऑफर केवल न्यू हॉलैंड के सभी प्रदेश के डीलरों के सौजन्य से। निम्न व शर्तें लागू।  
\*यह 6 साल की वॉरंटी केवल न्यू हॉलैंड के ट्रैक्टरों पर लागू है। विवरण एवं शर्तें के लिए न्यू हॉलैंड के डीलरों से संपर्क करें।

## खाद्यान्न उत्पादन 329 मिलिटन टन होना अनुमानित

गेहूं उत्पादन रिकार्ड 112.92 मिलियन टन पहुंचने की उम्मीद

नई दिल्ली। देश में फसल वर्ष 2023-24 के लिये खाद्यान्न उत्पादन 328.85 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो पिछले साल के 329.69 मिलियन टन से थोड़ा कम है। चावल और गेहूं में रिकार्ड उत्पादन के बावजूद, दालों और मक्का उत्पादन में 6% की गिरावट ने समग्र गिरावट में योगदान दिया।

कृषि मंत्रालय के तीसरे अग्रिम अनुमान में इन आंकड़ों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उच्च पैदावार के कारण गेहूं का उत्पादन 112.02 मिलियन टन के पिछले अनुमान को



पार करते हुए रिकार्ड 112.92 मिलियन टन तक पहुंचने का अनुमान है। चावल का उत्पादन भी बढ़ने की उम्मीद है, जो पिछले साल के 135.76 मिलियन टन से बढ़कर 136.7 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा।

दालों का उत्पादन पिछले साल के 26.06 मिलियन टन से 6% घटकर 24.47 मिलियन टन रहने का अनुमान

है। यह गिरावट महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे प्रमुख राज्यों में खराब मानसून की स्थिति के कारण है। हालांकि, तुअर और मसूर का उत्पादन बढ़ा है, जबकि उड़द और मूंग का उत्पादन काफी कम हुआ है। 2024-25 फसल वर्ष के लिए सरकार का लक्ष्य 340.40 मिलियन टन का खाद्यान्न उत्पादन लक्ष्य हासिल करना है।

## बीज विशेषांक के प्रमुख आकर्षण



- बीज उपचार के पश्चात करें बुवाई 5
- सीड ट्रीटिंग ड्रम से करें बीज उपचार 8
- सोयाबीन बुवाई के पहले बीज प्रबंधन 9
- सोयाबीन का उत्पादन कैसे बढ़ायें? 10
- खरीफ फसलों की उन्नतशील प्रजातियों को बोयें 11
- टमाटर के फफूंद, जीवाणु और विषाणु रोग 12
- खरीफ बुआई से पहले की तैयारी 13

**क्रिफास गोल्ड**

**दुगुनी शक्ति दमदार प्रहार**

इल्लियों एवं रस चूसक कीटों का सम्पूर्ण संहार

**हानिकारक कीट**

गईल बीटल  
सेमी लूपर  
एफिड्स  
जैसिड  
थ्रिप्स

**KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.** Office : 1115 Modi Tower, 98, Nehru Place, New Delhi-110019  
Toll Free: 1800 572 5065  
Website: www.krepl.in



# मोदी सरकार की हैट्रिक

## एनडीए को 293 सीट एवं इंडिया 234 सीट पर सिमटा

### किस दल को कितनी सीटें

दल	प्राप्त सीट
भाजपा	240
कांग्रेस	99
सपा	37
टीएमसी	29
डीएमके	22
एनसीपी	16
जदयू	12
शिवसेना (यूबीटी)	9
शिवसेना (शिन्डे)	7
एनसीपी (पवार)	8
लोजपा	5
वाईएसआरसीपी	4
राजद	4
माकपा	4
आईएमएल	3
आप	3
झामुमो	3
जनसेना पार्टी	2
सीपीआई	2
जेडीएस	2
वीसीके	2
माकपा	2
रालोद	2
नेशनल कॉन्फ्रेंस	2
यूपीपीएल	1
असम गण परिषद	1
एचएएमएस	1
केरल कांग्रेस	1
आरएसपी	1
राकांपा (अजीत)	1
वीओटीपीपी	1
जेडपीएम	1
शिरोमणि अकाली दल	1
राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी	1
भारत आदिवासी पार्टी	1
एसकेएम	1
एमडीएमके	1
एसपीकेआर	1
आपना दल (सोनीलाल)	1
आजसू पार्टी	1
एआईएमआईएम	1
निर्दलीय	7
कुल	543

**नई दिल्ली।** देश के 65 करोड़ मतदाताओं का जनादेश 4 जून को आ गया। लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को स्पष्ट बहुमत मिला है। पिछले दो चुनावों में भारतीय जनता पार्टी अकेले अपने दम पर बहुमत में थी लेकिन वर्ष 2024 के चुनाव में भाजपा मात्र 240 सीट पर सिमटा गयी है। एनडीए के सहयोगी दलों को मिलाकर इस बार फिर से एनडीए की सरकार बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। 62 साल बाद तीसरी बार लगातार एक ही व्यक्ति (नरेन्द्र मोदी) प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। 543 सीटों वाली लोकसभा में भाजपा को अकेले के दम पर बहुमत नहीं मिला है। उसके सहयोगियों के साथ एनडीए 272 बहुमत का आंकड़ा पार कर रही है। ऐसी स्थिति में 16 सीटों वाली टीडीपी एवं 12 सीटों वाली जेडीयू किंग मेकर की भूमिका में है। एनडीए में कई छोटे-छोटे दल भी हैं जिन्हें 1 से 5 सीट तक मिली है। इसमें प्रमुख रूप से एलजेपी, एनसीपी (अजीत गुट) शिव सेना (शिंदे गुट), आरएलडी इत्यादि शामिल हैं। एनडीए ने मध्यप्रदेश, दिल्ली, हिमाचल, उत्तराखंड, अरुणाचल, त्रिपुरा की सभी सीटों को जीता है। इस बार भाजपा ने 5 राज्यों में क्लीन स्वीप किया है जबकि वर्ष 2019 के चुनाव में 8 राज्यों में क्लीन स्वीप किया था। इस बार के चुनाव में सबसे अधिक नुकसान भाजपा को उत्तरप्रदेश से हुआ है जहां पर पिछले चुनाव की तुलना में पार्टी को 29 सीटें कम मिली हैं। भाजपा ने अयोध्या, अमेठी समेत हिन्दी भाषी राज्यों की 67 सीटें गंवाई है। दक्षिण में भाजपा का खाता 1 सीट से केरल में खुला है। मोदी सरकार के 50 में से 13 मंत्री चुनाव हार गये हैं। 37 मंत्रियों को विजयश्री हासिल हुई है। कांग्रेस को लंबे अंतराल के बाद 99 सीटें हासिल हुई हैं। राहुल गांधी रायबरेली एवं वायनाड दोनों सीटें जीतने में सफल हुए हैं। समाजवादी पार्टी उत्तरप्रदेश में 37 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सपा को विजय मिली है। पश्चिम बंगाल में ममता दीदी का जलवा कायम है। पिछले चुनाव से अधिक सीटें इस बार टीएमसी को मिली हैं। महाराष्ट्र में जनता ने पुरानी शिवसेना एवं एनसीपी को तरजीह दिया है।

## म.प्र. की 29 सीटें भाजपा की झोली में प्रदेश में 40 साल बाद क्लीन स्वीप

**भोपाल।** लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश के नतीजों ने कई रिकॉर्ड बनाए। छिंदवाड़ा में 26 साल बाद भाजपा ने कांग्रेस का गढ़ भेदा। यहां विवेक बंटी साहू ने पूर्व सीएम कमलनाथ के पुत्र और मौजूदा सांसद नकुलनाथ को 1.13 लाख वोटों से हराया। इस तरह कांग्रेस के कब्जे वाली इकलौती सीट भी भाजपा के पास आ गई। भाजपा ने सभी 29 सीटें अपने नाम कीं। प्रदेश में 40 साल बाद कोई पार्टी सभी लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही। मप्र के चुनावी इतिहास में सिर्फ दो बार ही ऐसा हुआ है, जब सभी सीटें किसी एक पार्टी ने जीत ली हों। वर्ष 1984 में संयुक्त मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़ समेत) की सभी 40 सीटें कांग्रेस ने जीती थी। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह और कांतिलाल भूरिया जैसे दिग्गज भी अपनी सीट नहीं बचा सके। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बड़ी जीत हासिल की। भोपाल में आलोक शर्मा ने अरुण श्रीवास्तव को रिकॉर्ड 5.01 लाख वोटों से हराया।

इस चुनाव में भाजपा का वोट शेयर भी करीब सवा प्रतिशत बढ़कर पहली बार 59.27 प्रतिशत पहुंच गया। जीत के दो अनोखे रिकॉर्ड भी बने। कांग्रेस प्रत्याशी की नाम वापसी के बाद इंदौर में शंकर लालवानी ने 11.75 लाख वोटों के साथ देश की सबसे बड़ी जीत हासिल की। इस सीट पर दूसरे नंबर पर नोटा रहा। नोटा को 2.18 लाख वोट मिले। यह किसी भी चुनाव में नोटा को मिले देश में अब तक के सर्वाधिक वोट हैं।

### इन्दौर के नाम दो रिकार्ड

- शंकर लालवानी 11.75 लाख वोट से जीते
- नोटा को 2.8 लाख मत मिले

### मप्र में बड़ी जीत

● शिवराज सिंह चौहान	● वीडि शर्मा खजुराहो	● ज्योतिरादित्य सिंधिया गुना
विदिशा	5.41 लाख मतों से जीते	5.40 लाख वोट से विजयी
8.21 लाख वोटों से विजय		

### बड़े दिग्गज परास्त

● दिग्विजय सिंह राजगढ़	● नकुलनाथ छिंदवाड़ा	● कांतिलाल भूरिया रतलाम
1.46 लाख वोट से हारे	1.13 लाख वोट से परास्त	2.07 लाख वोट से हार

### प्रदेश से 11 सांसद पहली बार भाजपा के 15 सांसदों के टिकट रिपीट, सभी जीते

- भाजपा ने मुरैना, ग्वालियर, सागर, भोपाल, दमोह, बालाघाट, सीधी, जबलपुर, होशंगाबाद, रतलाम, विदिशा, गुना, धार में प्रत्याशी बदले थे। सभी जीते। कुल 15 सांसदों का टिकट रिपीट किया था, वे भी जीते। 11 प्रत्याशी पहली बार संसद पहुंचे।
- कांग्रेस के पांचों विधायक हारे- शहडोल से फुदलाल मार्को, मंडला से ओमकार सिंह मरकाम, सतना से सिद्धार्थ कुशवाहा, मिंड से फूल सिंह बैरैया और उज्जैन से महेश परमार हारे।

## मध्यप्रदेश के नव निर्वाचित सांसद

सांसद नाम	क्षेत्र	जीत का अंतर	सांसद नाम	क्षेत्र	जीत का अंतर
डॉ. राजेश मिश्रा	सीधी	206416	महेन्द्र सिंह सोलंकी	देवास	425225
हिमाद्री सिंह	शहडोल	313803	अनिल फिरौजिया	उज्जैन	375860
आशीष दुबे	जबलपुर	486674	सुधीर गुप्ता	मंडसौर	500655
वीडी शर्मा	खजुराहो	541229	ज्योतिरादित्य सिंधिया	गुना	540929
डॉ. वीरेन्द्र खटीक	टीकमगढ़	403312	डॉ. लता वानखेड़े	सागर	471222
राहुल लोधी	दमोह	406426	शिवराज सिंह चौहान	विदिशा	821408
फगन सिंह कुलस्ते	मंडला	103846	अनिता नागर सिंह	रतलाम	207232
भारती पारधी	बालाघाट	174512	सावित्री ठाकुर	धार	218665
विवेक बंटी साहू	छिंदवाड़ा	113618	शंकर लालवानी	इंदौर	1175092
गणेश सिंह	सतना	84949	आलोक शर्मा	भोपाल	501499
जनार्दन मिश्रा	रीवा	193374	रोडमल नागर	राजगढ़	146089
दर्शन सिंह चौधरी	होशंगाबाद	431696	दुर्गादास उडके	बैतूल	379761
शिवमंगल तोमर	मुरैना	52530	गजेन्द्र सिंह पटेल	खरगौन	135018
संध्या राय	मिंड	64840	ज्ञानेश्वर पाटिल	खंडवा	269971
भारत सिंह कुशवाहा	ग्वालियर	70210			

### जीतने वाले दिग्गज



सांसद	क्षेत्र	पार्टी	जीत का अंतर
नरेंद्र मोदी	वाराणसी	भाजपा	152513
हेमा मालिनी	मथुरा	भाजपा	293407
कंगना रनौत	मंडी	भाजपा	74755
राहुल गांधी	वायनाड	कांग्रेस	364422
राहुल गांधी	रायबरेली	कांग्रेस	390030
अखिलेश यादव	कन्नौज	सपा	170076
अमित शाह	गांधीनगर	भाजपा	744716
नितिन गडकरी	नागपुर	भाजपा	136868
किशोरी लाल	अमेठी	कांग्रेस	167196
मनोज तिवारी	नार्थ-इस्ट दिल्ली	भाजपा	137066

### हारने वाले दिग्गज



सांसद	क्षेत्र	पार्टी	हार का अंतर
अधीर रंजन चौधरी	बहरमपुर	कांग्रेस	539228
स्मृति इरानी	अमेठी	भाजपा	167196
दिनेश लाल यादव	आजमगढ़	भाजपा	161035
माधवी लता	हैदराबाद	भाजपा	338087
मेनका गांधी	सुल्तानपुर	भाजपा	43174
महबूबा मुफ्ती	अनंतनाग राजौरी	पीडीपी	281794
कन्हैया कुमार	नार्थ-इस्ट दिल्ली	कांग्रेस	137066
दिग्विजय सिंह	राजगढ़	कांग्रेस	145537
उमर अब्दुल्लाह	बारामुलानेशनल कॉन्फ्रेंस	संसद	204142
अजय राय	वाराणसी	कांग्रेस	152513

# महावीरा जिरोन सोयाबीन के लिये सर्वश्रेष्ठ खाद

● श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय  
हेड एगोनोमिस्ट  
आरएमपीसीएल इंदौर (म.प्र.)



हजार रुपये तक मुनाफा कमाया जा सकता है।

## सोयाबीन में क्यों जरूरी है महावीरा जिरोन?

किसान भाई शुरू से ही जिंक, बोरॉन, कैल्शियम, फास्फोरस एवं सल्फर युक्त महावीरा जिरोन सिंगल सुपरफास्फेट का प्रयोग आधार खाद के रूप में करें तो सोयाबीन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। महावीरा जिरोन में उपलब्ध फास्फोरस की मात्रा 16 प्रतिशत, कैल्शियम 19 प्रतिशत एवं सल्फर 11 प्रतिशत है। इसके अलावा 0.5 प्रतिशत जिंक एवं 0.20 प्रतिशत बोरॉन है। सोयाबीन की फसल में नवीन अंगों के निर्माण, पोटेशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करने में बोरॉन की प्रमुख भूमिका होती है। महावीरा जिरोन एसएसपी में उपलब्ध बोरॉन सोयाबीन के फूलों एवं फलों को गिरने से बचाता है।

सल्फर सोयाबीन में तेल की मात्रा बढ़ाता है। कैल्शियम जड़ों के विकास एवं पौधे के अंगों की रचना के लिये जरूरी एवं कोशिकाओं का अभिन्न तत्व होने से सोयाबीन के पौधे में मजबूती प्रदान करता है। इसमें उपलब्ध फास्फोरस सोयाबीन की जड़ों की

वृद्धि के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। महावीरा जिरोन युक्त खाद मुख्य और पौषक तत्वों का उपयुक्त स्रोत है। महावीरा जिरोन उच्चतम गुणवत्ता से भरपूर सिंगल सुपर फास्फेट उर्वरक है।

विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा अनुशंसित महावीरा जिरोन सोयाबीन के लिये सर्वश्रेष्ठ सिंगल सुपर फास्फेट बताया गया है। सोयाबीन में महावीरा जिरोन का प्रयोग करके आवश्यक पौषक तत्वों की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है। आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स का महावीरा जिरोन मध्यप्रदेश स्थित कंपनी के अधिकृत विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।

सोयाबीन मध्यप्रदेश राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल है। देश का 60 प्रतिशत सोयाबीन मध्यप्रदेश में पैदा किया जाता है इसीलिये मध्यप्रदेश को सोया राज्य कहा जाता है। वैसे तो सोयाबीन की खेती प्रदेश के अधिकांश जिलों में की जाती है लेकिन इन्दौर, उज्जैन एवं भोपाल संभाग में अधिकांश किसान खरीफ में सोयाबीन बोते हैं। प्रदेश में 55 लाख हेक्टेयर के लगभग सोयाबीन बोया जाता है जो कुल खरीफ क्षेत्र का 60 प्रतिशत है। मप्र में सोयाबीन का उत्पादन अन्य राज्यों की अपेक्षा कम है। किसानों द्वारा पौषक तत्व आधारित उर्वरकों का उपयोग नहीं करने से सोयाबीन का उत्पादन अपेक्षाकृत कम मिलता है। सोयाबीन का उत्पादन कम मिलने से किसानों को घाटा हो रहा है इसलिये सोयाबीन के प्रति किसानों की दिलचस्पी कम होती जा रही है।

## महावीरा जिरोन से बढ़ाएँ सोयाबीन का उत्पादन

उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रायवेट लिमिटेड ने सम्पूर्ण पौषक तत्व आधारित संतुलित उर्वरक "महावीरा जिरोन" उपलब्ध करवाया है जो सोयाबीन का उत्पादन एवं गुणवत्ता बढ़ाने में सक्षम है। महावीरा जिरोन की तीन बोरी प्रति एकड़ बुवाई के समय आधार खाद के रूप में प्रयोग करने पर सोयाबीन का उत्पादन दो क्विंटल प्रति एकड़ बढ़ाया जा सकता है। सोयाबीन में अन्य खाद उपयोग करने पर 4 से 5 क्विंटल उत्पादन मिलता है जबकि 'महावीरा जिरोन' का प्रयोग करने से प्रति एकड़ 6 से 7 क्विंटल उत्पादन पूर्ण गुणवत्ता के साथ लिया जा सकता है। 'महावीरा जिरोन' के साथ सोयाबीन की खेती से प्रति एकड़ 5 से 10

- महावीरा जिरोन से 2 क्विंटल प्रति एकड़ बढ़ाएँ सोयाबीन का उत्पादन।
- सोयाबीन में 5 से 10 हजार रुपये प्रति एकड़ कमाएँ मुनाफा।
- महावीरा जिरोन सोयाबीन के लिये सर्वश्रेष्ठ अनुशंसित सिंगल सुपर फास्फेट।
- पांच पौषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, जिंक, सल्फर एवं बोरॉन युक्त महावीरा जिरोन।

## सोयाबीन की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन ( अनुशंसित उर्वरक की मात्रा-KG10:24:16:20 ) प्रति एकड़

अवधि	महावीरा जिरोन किलो में	MOP किलो में	यूरिया किलो में	सिमट्रॉन किलो में	एमिट्रॉन-L मिली/ली.में	बोरॉन ग्राम में	MGS04 किलो में
बुवाई के समय	150	26	10	4	0	0	25
25-30 दिन बाद	0	0	12	0	0	0	0
40-50 दिन बाद	0	0	0	0	500	250	0
75-80 दिन बाद	0	0	0	0	0	0	0
कुल मात्रा-बोरी/ग्राम	150	26	22	4	500	250	25

## महावीरा जिरोन की कहानी-कृषक की जुबानी

### महावीरा जिरोन से मिली सर्वाधिक मूंग



सीहोर। जिले के चीज गांव निवासी श्री नरेन्द्र सिंह भाटी महावीरा जिरोन के सबसे बड़े प्रशंसक हैं। श्री भाटी ने इस साल मूंग की फसल में महावीरा जिरोन सिंगल सुपरफास्फेट उपयोग किया। कृषक ने बताया कि वे पहले सभी फसलों में डीएपी उपयोग करते थे। जब से उन्हें महावीरा जिरोन के बारे में पता चला तब से सिर्फ महावीरा जिरोन प्रयोग कर रहे हैं। श्री भाटी ने बताया कि डीएपी की तुलना में महावीरा जिरोन सस्ता एवं फसलों के लिये फायदेमंद है। इसमें पांच पौषक तत्वों का मिश्रण होने से फसल का उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों बेहतर रहती है। कृषक के अनुसार उन्होंने 10 एकड़ मूंग की फसल में 30 बोरी महावीरा जिरोन प्रयोग किया था। डीएपी की अपेक्षा महावीरा जिरोन से अधिक उत्पादन मिला। मूंग में चमक अधिक होने से बाजार भाव भी ज्यादा मिला। महावीरा जिरोन ऐसा उर्वरक है जो पौधों को रोग व्याधियों से भी बचाता है। अगली फसल के लिए भी यह उर्वरक फायदेमंद है। श्री भाटी ने अन्य किसानों से भी फसलों में महावीरा जिरोन डालने की अपील की है। यह पौषक तत्व आधारित उर्वरक है जो सभी फसलों के लिये उपयोगी है।

### महावीरा जिरोन से मिला सर्वाधिक गन्ने का उत्पादन



नरसिंहपुर। महावीरा जिरोन खाद ही नहीं बल्कि एक चमत्कार है। महावीरा जिरोन अन्य खाद की तुलना में सस्ती एवं फसल और खेत दोनों को पोषण देने वाली है। यह कहना है नरसिंहपुर जिले के किसान रमेश राजपूत का। श्री राजपूत ने इस साल गन्ना की फसल में 48 बोरी महावीरा जिरोन बोनी के समय उपयोग किया है। 12 एकड़ में गन्ने की फसल फरवरी माह में लगायी गई है। कृषक ने बताया कि गन्ने की प्रारंभिक बढ़वार बेहतरीन है। महावीरा जिरोन से पौधे अत्यधिक मजबूत एवं स्वस्थ हैं। गत वर्ष भी श्री राजपूत ने गन्ने की फसल में महावीरा जिरोन उपयोग किया था। प्रति एकड़ 45 से 48 मीट्रिक टन गन्ना प्राप्त हुआ था। कृषक रमेश राजपूत पांच पौषक तत्वों का मिश्रण होने से महावीरा जिरोन को सर्वश्रेष्ठ खाद मानते हैं।



## कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

ईमानदारी बहुत महंगा उपहार है। इसकी घटिया लोगों से उम्मीद मत करों।  
- वॉरेन बफेट

### जैसा बोओगे वैसा काटोगे

**बी**ज के मामले में यह कहावत 'बोया बीज बबूल का, आम कहां से होय' बिल्कुल सटीक बैठती है। बीज जितना बढ़िया बोया जायेगा उतना ही अच्छा उत्पादन मिलता है। अक्सर यह देखने में आता है कि बीज के मामले में किसानों द्वारा गलती की जाती है। बोने योग्य बीज न होने के बावजूद भी बोये जाने पर किसानों को भारी नुकसान होता है। कम उत्पादन मिलने पर किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। बीज के मामले में किसानों के साथ ठगी आम बात है। प्रतिवर्ष खरीफ एवं रबी बोनी के पूर्व बीज माफिया किसानों को अमानक बीज बेचने का प्रयास करते हैं। जब बीज का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहता तब किसान को पछतावा होता है। अभी भी देश में 50 प्रतिशत से अधिक ऐसे किसान हैं जो घर का पुराना बीज उपयोग करते हैं। उस बीज की शुद्धता के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं रहती है। किसी भी बीज को बोने से पहले उसकी शुद्धता एवं अंकुरण परीक्षण जानना अत्यधिक जरूरी है। कृषि वैज्ञानिकों की अथक मेहनत से कई फसलों की ऐसी किस्मों का आविष्कार किया गया है जो अधिकतम उत्पादन देने में सक्षम हैं। कई निजी क्षेत्र की बीज कंपनियों ने भी उत्कृष्ट किस्म के बीज किसानों को उपलब्ध करवाये हैं जो अधिक से अधिक उत्पादन दे रहे हैं। बीज के मामले में किसानों को अत्यधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जहां से भी बीज खरीदें उसकी सत्यता एवं गुणवत्ता परीक्षण जरूर करें। किसानों को अमानक बीज बेचने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिये। ऐसे प्रदायकों को काली सूची में डालकर आजीवन प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये। कृषि विभाग के मैदानी अमले का यह दायित्व बनता है कि किसानों के साथ धोखाधड़ी करने वालों के खिलाफ आपराधिक प्रकरण कायम करें। किसानों को उन्नत किस्म के बीज अत्यधिक महंगे दाम पर बेचे जाते हैं। बीजों के दाम समय पर तय किये जाने चाहिये। बीजों का दाम तय करते समय इस बात का विशेष ख्याल रखना चाहिये कि किसानों की क्रय शक्ति के अंदर बीज के दाम होने चाहिये। बीज प्रमाणीकरण के मामले में भी किसान धोखाधड़ी के शिकार होते हैं। कई प्रदायक अमानक बीज होते हुये भी उसे प्रमाणित कराकर ऊंचे दाम पर किसानों को बेचते हैं। बीज चाहे खाद्यान्न का हो या बागवानी का मूल्य नियंत्रण होना चाहिये। किसानों द्वारा महंगी दरों पर बीज खरीदने से उत्पादन लागत बढ़ जाती है। किसानों को स्वयं का बीज उत्पादन करने का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिये। किसान के पास स्वयं का बीज होने पर उसकी उत्पादन लागत स्वतः कम हो जायेगी। बीज के मामले में सतर्कता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। कोई भी बीज खरीदने से पहले उसका प्रमाण किसान भाई अपने पास जरूर रखें। बीज सही नहीं निकलने पर ताकि उसकी शिकायत की जा सके। स्थानीय प्रशासन एवं कृषि विभाग का यह दायित्व बनता है कि किसानों के साथ होने वाली इस धोखाधड़ी को रोका जाय। इस साल मौसम विभाग ने देश में सामान्य मानसून की भविष्यवाणी की है। मानसून समय से देश में प्रवेश कर चुका है। ऐसी स्थिति में समय पर पर्याप्त मात्रा में किसानों के लिये बीज उपलब्ध करवाना चाहिये।

## जल स्रोतों का संरक्षण मानव जीवन के लिए आवश्यक : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने विश्व पर्यावरण दिवस पर किया जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में माना गया है कि पृथ्वी पर्वत नदी पेड़-पौधों में जीवंतता है और वे हमारे लिए पूजनीय हैं। जिस प्रकार मानव देह में धमनियों के माध्यम से रक्त का संचार होता है उसी प्रकार नदियां पृथ्वी पर जीवन का संचार करती हैं। अतः हम सबके लिए नदियों का अक्षुण्ण निरंतर प्रवाह आवश्यक है। नदियों के प्रवाह को दूषित करना या उनमें अवरोध उत्पन्न करना जीवन में अवरोध उत्पन्न करने के समान है। इस दृष्टि से जल स्रोतों का संरक्षण मानव जीवन के लिए आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव विश्व पर्यावरण दिवस पर रायसेन जिले में झिरी बहेड़ा स्थित बेतवा नदी के उद्गम स्थल पर जल गंगा संवर्धन अभियान के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। डॉ. यादव ने बेतवा नदी के उद्गम स्थल की पूजा-अर्चना कर तथा बरगद का पौधा रोपकर जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ किया। अभियान का समापन 16 जून को गंगा दशहरा के अवसर पर उज्जैन में होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ जनजातीय भाई-बहनों ने 108 पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल, पूर्व मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी, पूर्व मंत्री तथा विधायक सुरेन्द्र पटवा इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अभियान के अंतर्गत 3 हजार 90 करोड़ लागत के जल संरक्षण के 990 कार्य आज से प्रदेश में आरंभ हो रहे हैं। प्रत्येक जिले, विकासखंड और पंचायत स्तर



पर जल संरचनाओं की मरम्मत, पर्यावरण संरक्षण और पौधरोपण के लिए जनभागीदारी से गतिविधियां संचालित की जाएंगी। डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नदियों के संरक्षण के लिए नमामि गंगे अभियान आरंभ किया। इसी प्रकार उनकी पहल पर केन-बेतवा-लिंग परियोजना के लिए 45 हजार करोड़ रूपए मध्यप्रदेश को तथा 45 हजार करोड़ रूपए उत्तरप्रदेश को उपलब्ध करवाए गए। नदी जोड़ो अभियान की इस महती पहल से बुंदेलखंड का संपूर्ण क्षेत्र सिंचित होगा और क्षेत्रवासियों की पेयजल संबंधी समस्या का भी समाधान होगा। इसी प्रकार राजस्थान के साथ पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो अभियान के लिए मध्यप्रदेश में 35 हजार करोड़ और राजस्थान में 35 हजार करोड़ रूपए से गतिविधियां संचालित की जाएंगी।

## जल-स्रोतों के आसपास प्रोत्साहित किया जाए वृक्षारोपण

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 5 जून से प्रदेश में आरंभ जल गंगा संवर्धन अभियान में जल-स्रोतों के संरक्षण और साफ-सफाई के साथ-साथ इन स्थानों पर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित किया जाए। प्रदेश

लिए नगर निगम भोपाल द्वारा जन-भागीदारी से चलाए जा रहे अभियान की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश में वॉटर स्पोर्ट्स को प्रोत्साहित किया जाएगा। डॉ. यादव जल स्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए चलाये जा

विजयवर्गीय ने कहा कि प्रदेश पवित्रता और दिव्यता बनाए की जीवन रेखा नर्मदा नदी की रखना जरूरी है।

### अनमोल वचन

महान कार्य करने का एकमात्र तरीका यह है कि आप अपने काम से प्यार करें।  
- स्टीव जॉब्स

### पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

ज्येष्ठ शुक्ल/आषाढ़ कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् 2081 ईस्वी सन् 2024

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
11 जून 24	मंगलवार	ज्येष्ठ शुक्ल-05	
12 जून 24	बुधवार	ज्येष्ठ शुक्ल-06	
13 जून 24	गुरुवार	ज्येष्ठ शुक्ल-07	
14 जून 24	शुक्रवार	ज्येष्ठ शुक्ल-08	
15 जून 24	शनिवार	ज्येष्ठ शुक्ल-09	
16 जून 24	रविवार	ज्येष्ठ शुक्ल-10	गंगा दशहरा
17 जून 24	सोमवार	ज्येष्ठ शुक्ल-11	निर्जला एकादशी
18 जून 24	मंगलवार	ज्येष्ठ शुक्ल-12	
19 जून 24	बुधवार	ज्येष्ठ शुक्ल-12	प्रदोष व्रत
20 जून 24	गुरुवार	ज्येष्ठ शुक्ल-13	
21 जून 24	शुक्रवार	ज्येष्ठ शुक्ल-14	
22 जून 24	शनिवार	ज्येष्ठ शुक्ल-15	पूर्णिमा
23 जून 24	रविवार	आषाढ़ कृष्ण-1/2	
24 जून 24	सोमवार	आषाढ़ कृष्ण-3	

### जल गंगा संवर्धन अभियान में 5 करोड़ 50 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य

में अभियान अवधि में 5 करोड़ 50 लाख पौधे रोपने का लक्ष्य है, संपूर्ण प्रदेश में जन भागीदारी से पौधे लगाए जाएंगे। जल-गंगा संवर्धन अभियान, गंगा दशमी के बाद भी जारी रहेगा, सभी स्थानीय निकाय अपने-अपने स्तर पर अभियान संबंधी गतिविधियां संचालित करेंगे। हरियाली अमावस्या के बाद सघन रूप से पौधरोपण की गतिविधियां संचालित की जाएंगी। डॉ. यादव ने भोपाल में छोटे तालाब की साफ-सफाई के

रहे जल-गंगा संवर्धन अभियान के दूसरे दिन भोपाल के छोटे तालाब की स्वच्छता के लिए श्रमदान करने के बाद सभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय संस्कृति में नदी, पर्वत और पृथ्वी में जीवन माना गया है। मध्यप्रदेश देश की नदियों का केन्द्र बिन्दु है। यहाँ से सभी दिशाओं में बहने वाली नदियों की उत्पत्ति होती है।

नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश

• डॉ. आशीष श्रीवास्तव  
कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा (म.प्र.)

**बी**ज प्रत्येक फसल की आधारशिला है जिसके ऊपर बोयी गई फसल की अच्छी पैदावार निर्भर करती है। यदि बुआई के लिए उपयोग किया जाने वाला बीज स्वस्थ व निरोगी है तो बीजों का अंकुरण अच्छा होगा व पौधे निश्चित ही स्वस्थ होंगे।

बीजोपचार का मुख्य उद्देश्य बीज में लगने वाले रोगजनक या बीज के अंदर जीवित कोशिकाओं को संक्रमित करना या फिर अंकुरण के समय भूमि में फफूंद द्वारा बीज पर आक्रमण को रोकना है। मध्यप्रदेश में रबी मौसम में प्रमुख रूप से गेहूं, चना, मसूर, मटर आदि फसलों की खेती की जाती है। पिछले कुछ वर्षों से मध्यप्रदेश में दलहनी फसलों के क्षेत्रफल में गिरावट आ रही है। इसका प्रमुख कारण मृदा व बीज जनित रोगों के प्रभावी प्रबंधन के उपाय न होना है। बीजोपचार मृदा व बीज जनित रोगों के प्रबंधन में काफी कारगर साबित हुआ है। बीजोपचार से प्रारंभिक अवस्था में होने वाली बीमारियों से बचाव आसानी से किया जा सकता है। जिसके प्रति किसानों को जागरूक होना होगा। बीजोपचार करने से बीजों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से फसलों की सुरक्षा की जा सकती है। बीज के ऊपर सुरक्षा आवरण से मृदा, बीज व अन्य जीवों से सुरक्षा होती है। बीज अंकुरण बढ़ने से अंकुरण के औसत में सुधार से बीज की मात्रा कम लगती है। मृदा जन्य रोगों का प्रकोप कम होता है एवं अंकुरण का प्रतिषट अधिक होता है।

#### बीजोपचार के तरीके

**भौतिक विधि से उपचार:** इस विधि के अंतर्गत गर्म पानी, सूर्य ऊर्जा तथा विकिरणों द्वारा बीजोपचार किया जाता है। बीज के अंदर रहने वाले रोगजनकों जैसे गेहूं के कण्डवा रोग के लिए सूर्य के ताप से बीजों को उपचारित करते हैं। इसके लिए बीज को 4 घंटे पानी में भिगोने के बाद दोपहर मई की गर्मी में पक्के फर्श या टीन पर पतली तह में डालकर सुखाते हैं। रोग प्रथक्करण विधि से भी बीज या पौध अवशेषों को बीज से अलग करके नष्ट करते हैं। इसके लिए बीज को 0.5 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोते हैं जिससे रोगी बीज ऊपर तैरकर आ जाते हैं। इनको बाहर निकाल कर नष्ट कर देते हैं और शेष बीजों को साफ पानी से धोकर, सुखाकर बोने के काम में लेते हैं। यह विधि गेहूं के सेहूँ रोग एवं ज्वार, बाजरा के अर्गट रोग को रोकने में सहायक होती है। विकिरण विधि से विभिन्न तीव्रता की अल्ट्रावायलेट किरणों को अलग-अलग समय पर बीजों पर से गुजारा जाता है जिससे बीज की सतह या उसके अंदर पाये जाने वाले रोगजनक नष्ट हो जाते हैं।

**रासायनिक विधि से बीजोपचार:** इस विधि से बीज को फफूंदनाशक रसायनों द्वारा उपचारित किया जाता है। यह विधि मृदा एवं बीज जनित रोगों की रोकथाम की सबसे आसान, सस्ती और लाभकारी विधि है। फफूंदनाशी रसायन बीज एवं मृदा जनित हानिकारक रोगजनकों को मार डालता है अथवा उन्हें फैलने से रोकता है। यह एक संरक्षण कवच के रूप में बीज के चारों ओर

# बीज उपचार के पश्चात करें बुवाई फसल को रोगों से बचाता है बीज उपचार




घेरा बना लेता है। जिससे बीज को रोगजनक के आक्रमण एवं सड़ने से रोका जा सकता है। इस विधि में आवश्यकतानुसार स्वच्छ व स्वस्थ बीज को लेकर फफूंदनाशक दवा की अनुशंसित मात्रा मिलाते हैं। बीज की अधिक मात्रा होने पर बीजोपचार यंत्र का उपयोग करते हैं तथा बीज की मात्रा कम होने पर बीज व दवा दोनों को मटका या प्लास्टिक की बोरी में डालकर 10 से 15 मिनट तक हिलाते हैं। जिससे फफूंदनाशक दवा की परत बीजों पर चढ़ जाये। तत्पश्चात उपचारित बीज को छाया व हवादार जगह में सुखाकर बुआई करते हैं। बीजोपचार के लिए उपर्युक्त फफूंदनाशक दवाओं में थाइरम, कार्बेन्डाजिम, कार्बाक्सिन ट्राइकोडरमा व स्यूडोमोनास आदि का प्रयोग किया जाता है। जैविक फफूंदनाशकों द्वारा बीजोपचार मृदा जनित बीमारियों के प्रबंधन में कारगर पाया गया। जैविक फफूंदनाशकों में ट्राइकोडरमा या स्यूडोमोनास की 5.0 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से अथवा कार्बाक्सिन के बाद ट्राइकोडरमा को मिलाकर बीजोपचार करने से उगरा व सूखा जड़ सड़न रोग का प्रबंधन काफी असरकारक रहा है (5.0 ग्राम ट्राइकोडरमा के साथ 2.0 ग्राम कार्बाक्सिन प्रति किलो बीज की दर से प्रयोग करें।)


#### बीजोपचार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- ▶ इस बात का विशेष ध्यान रखें कि यदि बीजोपचार के लिए फफूंदनाशक दवाओं के साथ-साथ कीटनाशक दवाओं का भी प्रयोग किया जा रहा है तो सर्वप्रथम बीज को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करें तत्पश्चात कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करें व अंत में राइजोबियम अथवा पी. एस. बी. कल्चर से बीजों को उपचारित करें।
- ▶ बीजों को बुआई से 24 से 48 घंटे पूर्व भी उपचारित किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में विशेष ध्यान रखें कि उपचारित बीज में खाद उर्वरकों को मिलाकर न रखें।
- ▶ राइजोबियम अथवा पी.एस.बी. कल्चर आदि दवाओं को खरीदते समय ध्यान दें

कि उसमें डेले न हो। यदि हों तो बीजोपचार से पूर्व उन्हें बारीक अवश्य कर लेंवे अन्यथा बोनी करते समय सीडड्रिल में फंसने की संभावना रहती है।

- ▶ बीजोपचार करते समय रासायनिक दवाओं को शरीर के संपर्क में आने से बचाने हेतु हाथ के दस्ताने व मुँह पर मास्क आदि का प्रयोग करें।
- ▶ बीजोपचार करते समय किसी भी प्रकार से धूम्रपान एवं खानपान की वस्तु का सेवन न करें।
- ▶ फफूंदनाशक दवाओं को खरीदते समय उनके पैकेट पर उनके बनने से लेकर प्रभावित रहने कि तिथि व विधि लिखी होती है। इसे देखकर ही प्रयोग करें।
- ▶ बुआई में प्रयोग होने वाले बीज को फफूंदनाशक से उपचारित करने के बाद खाद्यान एवं मवेशियों से दूर रखें।
- ▶ बिना पूर्व जानकारी के दवाओं का प्रयोग न करें।
- ▶ उपयोग किये जाने वाले फफूंदनाशक रसायन की मात्रा तथा उसके साथ सम्मिश्रित होने वाले अन्य रसायनों के संबंध में भी जानकारी होना आवश्यक है।






## अपने हर बीज को बनाएं दमदार बीटाबीज

**हर बच्चे को पोलियो का टीका,**

**हर बीज को वीटावैक्स का टीका**

1800-102-1022



इंडिया का प्रणाम हर किसान के नाम

- दीपक चौहान, (वैज्ञानिक- कृषि अभियांत्रिकी)
- डॉ. मृगेन्द्र सिंह
- डॉ. बृजकिशोर प्रजापति
- डॉ. अल्पना शर्मा
- भागवत प्रसाद पंडे

कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म.प्र.)

**ह** मारे देश के किसान भाई फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयत्न करते हैं। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक खेती का इस्तेमाल होता है। फसल उत्पादन करने के लिए बीज एक मूल उद्देश्य है। उत्पादकता बढ़ाने के लिए उत्तम बीज का होना भी आवश्यक है।

उत्तम बीजों के चुनाव के बाद उनका उचित बीजोपचार भी जरूरी है, क्योंकि बहुत से रोग बीजों से फैलते हैं। अतः रोगजनकों, कीटों एवं असामान्य परिस्थितियों से बीज को बचाने के लिए बीजोपचार एक महत्वपूर्ण उपाय है। यदि बीज का सही शोधन किया जाए व सही समय पर बुवाई की जाए तो बहुत ही अच्छी पैदावार पाई जा सकती है। आज ऐसे किसानों की संख्या बहुत अधिक है जो अनुपचारित बीज बोते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें खेती में अच्छा लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक खेती हेतु किसान भाइयों के लिए सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करना अति आवश्यक है।

### क्या है सीड ट्रीटिंग ड्रम



सीड ट्रीटिंग ड्रम एक बीज उपचारक उपकरण है, जिसमें बीज और रासायनिक दवाइयों को यांत्रिक रूप से मिलाकर बीज का शोधन किया जाता है। यह उपकरण स्टैंड (फ्रेम), ड्रम, शाफ्ट (रॉड) और हैंडल (हथ्थे) से मिलकर बना होता है। इस उपकरण का सबसे प्रमुख भाग ड्रम है, जिसे एक विशेष प्रकार की गैल्वेनाइज्ड चादर से बनाया गया है। गैल्वेनाइज्ड चादर होने के कारण इसकी ऊपरी सतह पर जंग नहीं लगता। साथ ही ड्रम के अंदर एक विशेष प्रकार की कोटिंग होने के कारण वह पूरी तरह चिपका और सुरक्षित होता है, चिपका होने के कारण बीज आसानी से दवाई से मिल जाता है। साथ ही बीज की मिलावट एक जैसी ही होती है व किसी प्रकार की कोई रूकावट बीज के शोधन में नहीं आती। ड्रम को इस तरह बनाया गया है कि बीज अंदर में सुरक्षित रहता है और टूटता भी नहीं, मूंगफली या किसी प्रकार का बीज भी इसमें आसानी से शोधन किया जा सकता है। ड्रम को स्टैंड (फ्रेम) के ऊपर सुरक्षित ढंग से फिट किया गया है, ड्रम के अंदर शाफ्ट की एक्सिस तिरछी होने के कारण ड्रम अद्ध गोलाई में घूमता है, इसलिए ड्रम में डाली हुई दवाईयां आसानी से बीज से लग जाती हैं। ड्रम के ऊपर लॉक करने की सुविधा दी गई है, जिससे बीज सुरक्षित रहता है साथ में बीज नीचे नहीं गिरते। इस उपकरण का स्टैंड भी काफी मजबूती से बना होता है एवं स्टैंड के चारों निचले हिस्से पर गोलाई वाला आधार दिया गया है, जिसके कारण उपकरण उबड़-खाबड़ जमीन, बारिश में भी समतल आधार पर बना रहता है। इस उपकरण की क्षमता मानव क्षमता के ऊपर निर्भर करती है, फिर भी सामान्यतः 75 से 100 किलो/प्रति घंटा तक बीज का शोधन किया जा सकता है। एक ही बार में 15-20 किलो का शोधन बहुत ही सरल तरीके से किया जा सकता है। यह उठाने में हल्का होता है एवं इस उपकरण की अनुमानित कीमत लगभग 2500-3000 रुपये तक है।

### सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग कैसे करें

- ▶ सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करने से पूर्व यह देख ले की वह साफ और सही अवस्था में हो।
- ▶ ड्रम के भीतरी हिस्से साफ ना होने पर उसे झाड़ू की सहायता से साफ करें, गीले कपड़ों का प्रयोग बिल्कुल भी न करें, उससे इसके अंदर के भाग में जंग लग सकती है।
- ▶ सीड ट्रीटिंग ड्रम के सभी नट एवं बोल्ट को अच्छी तरह से जांच लें।
- ▶ अब ड्रम के बाहरी सतह में लगे लॉक को खोल लें।
- ▶ अब बीजोपचार हेतु बीज और जरूरत अनुसार रासायनिक दवाई/पाउडर को ड्रम में डाल दें एवं आवश्यकता पड़ने पर बहुत ही अल्प मात्रा में पानी डाल दें, ताकि बीज और रासायनिक दवाई/पाउडर का मेल सही तरीके से हो पाए।
- ▶ अब ड्रम को लॉक कर दें।
- ▶ अब ड्रम को करीब 15-20 बार हैंडल के माध्यम से घुमाएं।

- ▶ घुमाने के पश्चात ड्रम को 1-2 मिनट के लिए छोड़ दें, ताकि रासायनिक दवाई अच्छे से बीज में लग जाए।
- ▶ ड्रम के ठीक नीचे एक बड़ा प्लास्टिक (पॉलिथीन) शीट/चादर या कंटेनर/बर्तन रखें।
- ▶ अब, ड्रम के लॉक को खोल लें।
- ▶ अब उपचारित बीज को ड्रम से बाहर निकाल कर प्लास्टिक शीट या बर्तन में रखें एवं बचे हुए बीजों को झाड़ू की मदद से

### नीकाल लें। सीड ट्रीटिंग ड्रम से बीजोपचार के फायदे

- अधिक अंकुरण।
- अधिक प्रबल पौधे।
- आरम्भिक रोगों का प्रभावी नियंत्रण।
- दुबारा बुवाई करने की आवश्यकता नहीं।
- कम समय, श्रम एवं लागत।
- अधिक फसल उत्पादन।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी एक समान फसल।

### ध्यान रखने हेतु बातें :-

- बीजोपचार हेतु खरीदी गई

दवाई की अंतिम तिथि अवश्य देख लें।

- रासायनिक दवाई का प्रयोग संस्तुत मात्रा में ही करें, कम या अधिक मात्रा में नहीं।
- बीज शोधन के समय हाथ में दस्ताने तथा चहरे पर साफ कपड़ा अवश्य बांधें।
- बीज शोधन के पश्चात हाथ-पांव व चेहरा साबुन से भली-भांति साफ कर लें।
- बीजोपचार के बाद उपचारित बीज को 4-5 घंटे के अंदर बुवाई कर दें।



## विदिशा विनोवर फैक्ट्री

139-दुर्गा चौक तलैया, विदिशा (म.प्र.) फोन : 07592-232665 मो. : 9827215862

निर्माता - उड़ावनी मशीन, विदिशा ग्रेन (गेडिंग मशीन), सुरक्षा रोलिंग शटर, ट्राली, कल्टीवेटर, ट्रेक्टर चलित पंप एवं अल्टिनेटर हाइड्रा डोजर, बोनी मशीन बैल चलित एवं अन्य कृषि उपकरण।



भूसा पेंखा



उड़ावनी मशीन गेडिंग रिस्टम हस्त चलित P.T.O डोजर एवं लिफ्ट



सीड ग्रेटर महावली वश मॉडल सीड ग्रेटर (चार साइज में उपलब्ध)



गौरव मॉडल सीड ग्रेटर

E-mail : vidisha.factory@gmail.com Web.: facebook.com/vidishavinoberfactory

## शुद्ध कृषि

## समृद्धि हेतु

## समेकित समाधान



- समर्पित एवं प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा नवीनतम फार्म प्रौद्योगिकी का प्रचार सुनिश्चित करना।
- अपने व्यापक वितरण जाल के माध्यम से एम.ओ.पी., डी.ए.पी., चूरिया एवं अन्य कृषि साधनों को दूर पर पहुंचाना।
- अपने सभी कार्यों द्वारा निःशुल्क सेवा-आई.पी. का निष्ठा है।
- भारत की समृद्ध देशों को सुझावें प्रदान करने का स्वप्न।
- गन्ना उत्पादकों को सेवा हेतु चीनी उत्पादन में निवेशना।



इंडियन प्लांटिंग लिमिटेड

पोटाश भवन, 10 नो. गानेश पार्क,

मुम्बई रोड, नई दिल्ली-110060.

दूरभाष : 25761540, 25763570.

25732438, 25725084. फैक्स : 25755313

507-508, पांचवीं मंजिल, कारपोरेट जॉन, आशिमा पॉल, होशंगाबाद रोड, धोपात (म.प्र.) फोन : 0755-4055336, 4055337, फैक्स : 0755-4055338

निष्ठा, विश्वसनीयता एवं कृषि श्रेष्ठता का सर्वपूर्ण प्रतीक





• डॉ. चन्द्रजीत सिंह • डॉ. किंजल्क सी. सिंह  
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

## कृषक महिलाओं के लिये विशेष सोयाबीन बुवाई के पहले बीज प्रबंधन

**कृषि प्रबंधन में बहनों का बहुत बड़ा योगदान होता है। ऐसा देखा गया है जहाँ बहनें भी खेती में हाथ बँटाती हैं वहाँ उपज बेहतर होती है। ग्रामीण परिवार खरीफ के मौसम की फसलों की तैयारी में जुट गये हैं ऐसे में सोयाबीन की खेती में अधिक उपज के लिये कृषक बहनें यदि निम्नलिखित बातों पर ध्यान देती हैं तो निश्चित ही बेहतर उपज प्राप्त कर सकेंगी।**

### गहरी जुताई

▶ बहनें तीन साल में एक बार किये जानी वाली गहरी जुताई के लिये पर्याप्त राशि जमा करें। ▶ नौतपे के पहले, तीन साल में एक बार गहरी जुताई करवाने के लिये घर में किसान भाई को याद दिलायें और एकत्रित की हुई राशि उन्हें सौंपें। ▶ सुनिश्चित करें की समय पर गहरी जुताई हो जाये।

### बीज तैयार करने की विधि

▶ बीज को छानें। इसे छानने के लिये, दो व्यक्तियों द्वारा चलाया जाने वाले बड़े छेरे की चारों मूठ से रस्सी बाँध कर पेड़ की शाखा अथवा घर के अन्दर की बीम से झूले की तरह लटका दें। इसे जमीन से इतना ऊँचा लटकायें के जब जमीन पर बैठ कर कोई इसे चलाये तो यह उस व्यक्ति के नाभी की ऊँचाई पर हो। इस प्रकार तैयार झूले छेरे के नीचे तिरपाल बिछायें जिसपर कचरा गिरे और बगल में एक और तिरपाल बिछायें जिस पर छना हुआ बीज पलटायें। इस प्रकार कम श्रम में और शीघ्रता से मात्र एक व्यक्ति ही बीज छान लेगा। ▶ छानने के उपरान्त छेरे हुये बीज से बीज के आकार के कंकड़, पत्थर, मिट्टी के ढेले, कटे-फटे बीज, कीड़े द्वारा खाये हुये बीज, बदरंगे बीज और कम चमक के बीज बीन कर अलग कर दें। ▶ अब आपके पास बड़े आकार के चमकदार बीज उपलब्ध हैं। ध्यान रहे कि छानने और बीनने हेतु इतनी मात्रा में बीज लें कि अंत में पर्याप्त मात्रा में आपके पास बीज उपलब्ध हो सके। ▶ इस बात का भी ध्यान रखें कि कटाई के समय की गई बीज की किसी भी प्रकार की सफाई अगली बार की बुवाई के लिये पर्याप्त नहीं है अतः बोनी के ठीक पहले की नवरात्र के पूर्व ही बीज की तैयारी कर लें।

### बीज का नमूना कैसे तैयार करें-

▶ बीज की बोरी की ऊपरी सतह से पहली मुट्ठी और सबसे नीचे से पाँचवीं मुट्ठी बीज निकालें। बीच की सतह से क्रमशः दूसरी, तीसरी और चौथी मुट्ठी बीज निकालें। ▶ इन्हें सूप अथवा थाली में रख कर अच्छी प्रकार से मिला लें। ▶ आँख मूंद कर इन बीजों से सौ दाने निकाल लें।

### अंकुरण परीक्षण की विधि

▶ इन बीजों को दस दस दानों की दस कतार में गीले जूट के बोरे पर रख दें। ▶ ऊपर से एक और गीले जूट के बोरे से ढक दें। ▶ इन बोरीयों को सुरक्षित स्थान पर 48 घंटे के लिये रख दें। ▶ इन बोरीयों को लगातार गीला करते रहें। ▶ इसके उपरान्त ऊपर वाली बोरी को हटायें तथा बिना अंकुरित बीज और छोटे और कमजोर अंकुर वाले बीज को हटा दें। ▶ स्वस्थ अंकुरित बीज की संख्या को गिन लें।

### अंकुरण परीक्षण का परिणाम

▶ यदि 100 में से 75 से अधिक दाने स्वस्थ रूप से अंकुरित होते हैं तो 28 किलो सोयाबीन प्रति एकड़ बीज दर रखें। ▶ यदि 70 दानों में ही अंकुरण बीज होता है तो बीज दर 5 किलो बढ़ा दें। अर्थात् प्रति एकड़ 37 से 40 किलो बीज बोयें। ▶ यदि 70 से कम बीज अंकुरित हों तो बीज की छनाई करें तथा बदरंगे अथवा अलग किस्म के दिखने वाले दानों की बिनाई कर अलग करें। ▶ अब बीज को उपचारित कर बुवाई करें।

**फफून्दा नाशक द्वारा बीज का उपचार-** फफून्दा नाशी दवा 2 ग्राम थीरम + 1 ग्राम बैविस्टीन/किलो बीज की दर से उपचारित करें।

### बीज का जैव ऊर्वरक (कल्चर) द्वारा उपचार-

▶ बोनी पूर्व 1 एकड़ के बीज का उपचार 3 पैकेट पी.एस.बी. (600 ग्राम) तथा 1 पैकेट राईजोबियम (250 ग्राम) कल्चर

सोयाबीन की बोवाई कतारों में करें :- ▶ बीज की साफई, अंकुरण की जाँच तथा जैव ऊर्वरक (कल्चर) और फफून्दाशक से उपचारित करने के उपरान्त ही सोयाबीन की बुवाई करें। ▶ सोयाबीन की बुवाई हेतु ऐसे खेत का चुनाव करें जिसमें पानी का भराव न होता हो। ▶ सोयाबीन की बोवाई कतार में करें तथा कतार से कतार की दूरी 12-14 इंच रखें। इस तरह से बोनी के लिये सीड ड्रिल की एक कुसिया को बन्द करें और एक को खुली छोड़ें। और फिर बोनी करें। ▶ दस कतार के बाद एक कतार खाली छोड़ें, इस जगह का इस्तेमाल ऊँचे जूते पहन कर दवाई छिड़कने के लिये करें। ▶ बोनी हेतु मेड़नाली सीड ड्रिल अथवा बी. बी.एफ. प्लान्टर का उपयोग और लाभकारी होगा।



से उपचारित करें। यह उपचार, शिशु को पोलियो का टीका लगाने के समान है।

▶ कल्चर की जाँच के लिये, कल्चर को मुट्ठी में बन्द कर दबायें। अगर जैव ऊर्वरक (कल्चर) का लड्डू बनता है तो इस कल्चर में पर्याप्त नमी है और कल्चर में उपस्थित जीवों के सक्रिय होने की सम्भावना अधिक है।

▶ अच्छा जैव ऊर्वरक (कल्चर) प्राप्त करने के लिये कृषि विज्ञान केंद्र से सम्पर्क कर जवाहर कल्चर प्राप्त करें और इसी कल्चर का ही उपयोग करें।

### बीज उपचार की विधि

▶ प्लास्टिक की बोरी में बीज लें।

▶ पानी छींट कर हल्का गीला कर लें।

▶ बताई गई मात्रा में फफून्दा नाशक डालें।

▶ बोरी का मुँह बंद कर दें, बहनें दोनों छोरों से बोरी को पकड़ कर जोर से हिलायें।

▶ इसके उपरान्त बताई गई मात्रा में फिर कल्चर को डालें।

▶ अब बीज को बोयें।

**उपयुक्त खेत का चुनाव-** अधिक वर्षा होने की स्थिति में जल का भराव हो जाता है और सोयाबीन की फसल खराब हो जाती है। इस स्थिति से बचने के लिये उचित खेत का चुनाव अति आवश्यक है। सोयाबीन की खेती के लिये खेत के चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखें।

▶ सोयाबीन की बोनी के लिये ऊँचा तथा ढालयुक्त

खेत का चुनाव करें जिसमें तथा पानी का भराव न होता हो।

▶ सोयाबीन बोने के लिये ऐसे खेत का चुनाव करें जिसमें जलमग्नता की समस्या न आती हो।

▶ सोयाबीन के लिये ऐसे खेत का चुनाव करें जिसमें जल निकासी अच्छी व्यवस्था हो।

किसान भाईयों...

## सुपर नहीं 'खेतान' मांगिए

तिलाहनी, दलहनी सहित सभी फसलों में चमत्कारिक परिणाम सबसे ज्यादा तत्वों की आपूर्ति करने वाला

K9 सुपर      जिंक सुपर      बोरान सुपर

## खेतान

अब उपलब्ध कराने जा रहा है

## यूरिया सुपर

N-5/P-15/K-0/S-10

खेतान डालिए - मुनाफा निकालिए

खेतान केमिकल्स  
एण्ड फर्टिलाइजर्स लि.  
फोन: 0731-4200748, 4753666

यूनिट  
- निमरानी (म.प्र.) - झांसी एवं बाघ मलवा, जिला फतेहपुर (उ.प्र.)  
- धीनवा (राज.) - राजनांदगाव (छ.ग.) - यत्नेज (भरुच, गुज.)

किसान हित में हमारा हित निहित है

- डॉ. एम.के. श्रीवास्तव • डॉ. पवन कुमार अमृते  
पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी विभाग  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

**सो** याबीन भारत वर्ष की एक बहुत ही महत्वपूर्ण तिलहनी फसलों में से एक है। इसकी खेती खरीफ के मौसम में प्रमुख रूप से की जाती है। भारत वर्ष का 50 प्रतिशत से अधिक सोयाबीन का उत्पादन केवल म.प्र. में होता है जो कि देश में सर्वाधिक है।



भारत में वर्तमान में 119.4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सोयाबीन की खेती की जाती है तथा इसका उत्पादन 136.3 लाख टन है और उत्पादकता 1200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। म.प्र. में इसका क्षेत्रफल 52.4 लाख हेक्टेयर, उत्पादन लगभग 67.3 लाख टन और उत्पादकता 1285 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में वर्ष 1967 से अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना द्वारा उन्नत तथा विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के अनुकूल अधिक उपज व उच्च गुणवत्ता वाली जातियों तथा उन्नत सस्य एवं पौध संरक्षण तकनीकों के विकास ने सोयाबीन की खेती के नये आयाम खोल दिये हैं। वर्तमान में सोयाबीन उत्पादन को सीमित करने वाली कुछ प्रमुख समस्याएँ हैं जिसके कारण उत्पादन एवं उत्पादकता में निरंतर गिरावट दर्ज की जा रही है एवं किसान भाइयों को आर्थिक क्षति उठाना पड़ रही है। इन समस्याओं में-

- ▶ चारकोल जड़ सड़न, पीला मोजैक एवं झुलसन।
- ▶ नए कीटों का प्रकोप जिसमें तने की मक्खी व चक्रभृंग (तना छेदक कीट), अर्ध कुन्डलक इल्ली, कम्बल कीट, तम्बाखू की इल्ली, अलसी की इल्ली, चने की फली छेदक (पत्ती भक्षक कीट) एवं सफेद मक्खी।
- ▶ भूमि में आवश्यक मुख्य तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों का असंतुलन।
- ▶ भूमि में कार्बनिक पदार्थ की कमी।
- ▶ समुचित जल प्रबंध का अभाव एवं अवर्षा की स्थिति में सिंचाई साधनों की कमी।
- ▶ खरपतवार की समस्या।
- ▶ मौसम की प्रतिकूलता जिसमें क्रान्तिक अवस्थाओं में लम्बा सूखा, पकने की अवस्था में वर्षा का होना आदि।

#### भूमि का चयन एवं तैयारी

- ▶ रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गर्मी में गहरी जुताई करें। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के बाद 15-30 दिवस खेत खाली छोड़ने पर जमीन के नीचे आश्रय पाने वाले कीटों एवं भूमि जनित बीमारियों के अवशेष नष्ट हो जाते हैं तथा भूमि की जलधारण क्षमता एवं दशा में सुधार होता है।
- ▶ गोबर की खाद, कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट तथा सिंगल सुपर फास्फेट को खेत में समान रूप से छिड़कने के बाद बोनी के लिए जुताई करना श्रेष्ठ है।
- ▶ खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाये एवं खरपतवार नष्ट हो जायें इस प्रकार जुताई करना चाहिए।
- ▶ बुआई के पूर्व खेत के निचले हिस्से में प्रति 20 मीटर

# सोयाबीन का उत्पादन कैसे बढ़ायें ?

कृषि जलवायु क्षेत्र	जिले	उपयुक्त प्रजातियाँ
छत्तीसगढ़ का मैदान	बालाघाट तथा वारासिवनी	जे.एस. 335, जे.एस.93-05, जे.एस. 95-60,,जे.एस.20-34, जे. एस.20-29,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116
कैमोर का पठार तथा सतपुड़ा की पहाड़ियाँ	जबलपुर, कटनी, पन्ना, सतना, रीवा, सीधी, शहडोल, उमरिया, डिंडोरी, मंडला, सिवनी	जे.एस.335, जे.एस. 95-60, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस. 20-94, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35
विन्ध्या पठार	मोपाल, सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह, रायसेन	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69,, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, ए.एम.एम.बी.100-39
मध्य नर्मदा घाटी	नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा	जे.एस. 335, जे. एस. 95-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
गिर्द क्षेत्र	ग्वालियर, मिन्ड, मुरैना, शिवपुरी, गुना	जे.एस.335, जे. एस. 93-05,जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. .20-69,, जे. एस. 20-98, एन.आर.सी.-86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, जे.एस.21-72, आर.वी.एस. 2002-4, आर.वी.एस.एम. 2011-35
बुंदेलखंड क्षेत्र	छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 95 -60, 20-34, 20-29, जे.एस. 20-98, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35
सतपुड़ा का पठार	छिंदवाड़ा, बैतूल	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05,जे. एस. 95-60, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 86, जे.एस. 20-34, जे.एस.20-69,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस. 21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35
मालवा का पठार	मंदसौर, रतलाम, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, इंदौर, देवास तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस.95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस.20-29, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
निमाड़ घाटी	खंडवा, खरगोन, बडवानी,	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे.एस.20-34, जे. एस. 20-29, एन.आर.सी. 37, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18,, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130,आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
झाबुआ की पहाड़ियाँ	झाबुआ तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, जे. एस. 95-60, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-34, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35

अंतराल पर जल निकास नाली का निर्माण अवश्य करें जिससे अधिक वर्षा की दशा में पानी का निकास आसानी से हो सके एवं अवर्षा की दशा में सिंचाई उपलब्ध करा सकें।

#### बुवाई का समय

- ▶ सोयाबीन की बुवाई 22 जून (4-5 इंच वर्षा होने पर) से जुलाई के प्रथम सप्ताह के बीच उत्तम परिणाम देती है। इसमें परिस्थितिवश कुछ दिन आगे पीछे होना कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता।

#### जातियों का चयन

- ▶ सोयाबीन की जातियों का चुनाव उस क्षेत्र में वर्षा का औसत एवं भूमि के प्रकार को ध्यान में रखकर अर्थात् क्षेत्रीय अनुकूलता के आधार पर ही करना चाहिए।

**मध्यप्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के लिए सोयाबीन की अनुकूल जातियाँ**

**बीज दर :** ▶ सोयाबीन की बीज दर 60-80 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर निर्धारित है। ▶ जब बीज छोटे हों या ज्यादा फैलने वाली प्रजाति हो तो 60-70 कि.ग्रा. एवं बड़ा बीज हो तथा कम फैलने वाली प्रजाति हो तो 80-85 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज का प्रयोग करना चाहिए।

#### बीजोपचार :

- ▶ बीजोपचार के लिए हमें एफआई.आर. को अपनाना चाहिये।
- ▶ कार्बाक्सिन 37.5 प्रतिशत+थायरम 37.5 प्रतिशत, 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज या थायोफिनेट मेथाइल+पाइराक्लास्ट्रोबिन (50 प्रतिशत एफ.एस.) 1.5 मि.ली / कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।
- ▶ या पेनफ्लुफेन 13.28 प्रतिशत+ ट्राईफ्लाक्सीस्ट्रोबिन 13.28 प्रतिशत की 1 मि.ली. प्रति किग्रा बीज।
- ▶ या ट्राइकोडर्मा हर्जियानम नामक जैविक फफूंदनाशक की 5 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर सकते हैं, इससे बीज एवं मृदा जनित रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

▶ जहां पर तना मक्खी, सफेद मक्खी एवं पीला मोजैक की समस्या ज्यादा हो वहां पर थायामेथोक्जाम 70 डब्ल्यू.एस. नामक कीटनाशक दवा से 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचारित कर सकते हैं।

▶ फफूंदनाशक एवं कीटनाशक दवा के उपचार के पश्चात् 5-10 ग्राम ब्रेडीराइजोबियम कल्चर एवं 5-10 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर से प्रति किलो बीज उपचारित करके बुवाई करें। (शेष पृष्ठ 16 पर)



Cooperative and beyond...

**उत्पाद एक नजर में...**

- नीम लेपित पुरिया
- कुम्को डी. ए. पी.
- कुम्को एन. पी. के.
- कुम्को एन. पी. एस.
- कुम्को एम. ए. पी.
- कुम्को ठिक सल्फेट
- कुम्को प्राकृतिक पोटाश
- कुम्को कम्पोस्ट
- सिवारिका (समुद्री शैवाल)

- कुम्को तरल जैव उर्वरक
- राइजोबियम जैव उर्वरक
- एजीटोवेक्टर जैव उर्वरक
- एजीस्पाइरिलम जैव उर्वरक
- एसीटोवेक्टर जैव उर्वरक
- फॉस्फेट घुलनशीलता वाले
- जैव उर्वरक (पीएसबी)
- एन पी के तरल जैव उर्वरक
- कुम्को बीज



**बम्पर फसल का वादा, उन्नति का इरादा...**

- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- श्री सुनील केथवास, प्रक्षेत्र प्रबंधक  
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

**फ**सलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषक अपनी कम से कम उपलब्ध भूमि में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि फसल व किस्मों का चुनाव भूमि के अनुरूप, जलवायु, मौसम एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के आधार पर करना चाहिए। फसलों की किस्मों का चुनाव करते समय भूमि का प्रकार, क्षेत्र विशेष की जलवायु, बुवाई का समय, पानी की उपलब्धता, क्षेत्र विशेष में कीट-व्याधि, रोग का प्रकोप व आगामी मौसम में बोये जाने वाली प्रस्तावित फसलों के आधार पर करना चाहिए। मध्यप्रदेश के सभी जिलों में कृषकों के द्वारा सोयाबीन, धान, उड़द, अरहर फसलों का उत्पादन लिया जाता है।

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा विकसित एवं अनुशंसित सोयाबीन की किस्मों की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके कृषक 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

#### सोयाबीन की अनुशंसित व नवीनतम किस्में

किस्म	अनुशंसित वर्ष	पकने की अवधि (दिन)	अधिकतम उपज (क्वि./हे.)	फूल
जे.एस.- 22-12	2024	90	21	सफेद
जे.एस.- 22-16	2024	91	21	सफेद
एन.आर.सी.-157	2023	92	16	बैंगनी
एन.आर.सी.-152	2023	89	18	बैंगनी
एन.आर.सी.-150	2023	91	18	सफेद
एन.आर.सी.-131	2023	92	15	बैंगनी
जे.एस.-21-72	2023	97	21	सफेद
आर.वी.एस.एम.-2011-35	2021	98	22	सफेद
एन.आर.सी.-130	2021	92	15	बैंगनी
एन.आर.सी.-138	2021	93	18	सफेद
एन.आर.सी.-142	2021	97	20	बैंगनी
आर.वी.एस.-76	2021	101	21	बैंगनी
जे.एस.-20-116	2019	95-100	22	सफेद
जे.एस.-20-94	2019	97	21	बैंगनी
एन.आर.सी.-127	2018	102	18	सफेद
जे.एस.-2098	2018	96-101	21	सफेद
आर.वी.एस.-18	2017	92	20	सफेद
आर.वी.एस.-2002-4	2017	92-96	19	सफेद
जे.एस.-2069	2016	93-95	19	सफेद
जे.एस.-2034	2015	86-88	21	सफेद
जे.एस.-2029	2014	93-96	21	सफेद
आर.वी.एस.-2001-4	2014	101-105	25	सफेद

#### सोयाबीन की उन्नत किस्म

##### आरवीएसएम-11-35

- ▶ पकने की अवधि: 94-98 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 21-22 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल, फल्लियों पर रोए
- ▶ फल्ली चटकने की समस्या नहीं
- ▶ पीला मोजेक एवं चारकोल रॉट के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

##### जे.एस.- 21-71

- ▶ पकने की अवधि: 97दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 20-21 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक, चारकोल रॉट एवं राइजोक्टोनिया एरियल ब्लाइट के प्रति प्रतिरोधी

# खरीफ फसलों की उन्नतशील प्रजातियों को बोयें



#### एनआरसी-130

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल एवं फल्लियों पर रोए
- ▶ बीज की नाभि के ऊपर भूरे रंग का टीका
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

#### एनआरसी-131

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि व चिकनी फल्लियां
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

#### एनआरसी-138

- ▶ उच्च अंकुरण क्षमता
- ▶ पकने की अवधि: 90-93 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18-20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

#### एनआरसी-142

- ▶ पकने की अवधि: 97 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ कुनिटज ट्रिप्सिन इन्हिबिटर व लायपोक्सीजिनेज एसिड-

#### 2 मुक्त प्रथम किस्म

- ▶ औसत उत्पादन: 20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के लिए प्रतिरोधी

#### एनआरसी-150

- ▶ पकने की अवधि: 91 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 मुक्त किस्म
- ▶ पीला मोजेक के लिए मध्यम प्रतिरोधी
- ▶ चारकोल रॉट प्रतिरोधी किस्म

#### एनआरसी-154

- ▶ पकने की अवधि: 89 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 व ट्रिप्सिन इन्हिबिटर मुक्त किस्म
- ▶ तना मक्खी व चक्रभृंग के लिए प्रतिरोधी

#### एनआरसी-157

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 16 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ देरी से बुवाई के लिए उपयुक्त

(शेष पृष्ठ 14 पर)



## नई पीढ़ी के उर्वरक





**सम्पूर्ण**  
Zinc + Boron

कार्बोराटा 16% | राइबर 11% | कैल्शियम 19% | मिश्र 0.5% | गोरान 0.2%

पाँच पोषक तत्वों से परिपूर्ण



**सम्पूर्ण**  
Zinc + Boron with Mg

कार्बोराटा 16% | राइबर 11% | कैल्शियम 19% | मिश्र 0.5% | गोरान 0.2% | मैग्नीशियम 0.5%

परिपूर्ण सम्पूर्ण के साथ अब मैग्नीशियम भी

**50 सालों से किसानों का भरोसा**

**रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड**  
इकाईयाँ : इन्दौर • उदयपुर • पुणे • निवाहेड़ा

20M, के.एच. स्टॉन, इन्दौर, उज्जैन रोड, गांधी राजीव, धरमपुरी के पास,  
राष्ट्रीय राजमार्ग, जिला इन्दौर, हेल्पलाइन नंबर: 71608-36083  
E-mail: customercare@ramagroup.co.in

- डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक
- डॉ. यशोवर्धन सिंह, जूनियर रिसर्च फेलो
- प्रियांशी गर्ग  
तकनीकी सहायक (एआईसीआरपी-चना)  
रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विवि, झांसी (उ.प्र.)

### फफूंद रोग

**आद्र गलन रोग ( पाइथियम एफैनिडरमैटम ):** यह नर्सरी में होने वाली टमाटर की सबसे खराब बीमारियों में से एक है। टमाटर का आद्र गलन रोग दो चरणों में होता है, यानी उद्भव से पूर्व और उद्भव के बाद। उद्भव से पूर्व चरण में पौधे मिट्टी की सतह पर पहुंचने से ठीक पहले मर जाते हैं। युवा मूलक और प्लम्यूल मर जाते हैं और पौधे पूरी तरह सड़ जाते हैं। उद्भव के बाद चरण की विशेषता है जमीन की सतह पर कॉलर के युवा, किशोर ऊतकों का संक्रमण। संक्रमित ऊतक नरम और पानी से भीग जाते हैं और गिर जाते हैं।

**नियंत्रण:** फंगल कल्चर ट्राइकोडर्मा विरिडी (4 ग्राम/किग्रा बीज) या थिरम (3 ग्राम/किग्रा बीज) के साथ बीज उपचार आद्र गलन रोग को नियंत्रित करने का एकमात्र निवारक उपाय है। प्रभावित पौधों को डाइथेन एम 45 (3 ग्राम/लीटर पानी) के साथ मिट्टी में भिगोने से रोग की घटनाओं को कम करने में मदद मिलती है।

**अगती अंगमारी ( अल्टरनेरिया सोलानी ):** यह टमाटर की एक आम बीमारी है जो विकास के किसी भी चरण में पत्तियों पर होती है। यह फफूंद पत्तियों पर हमला करता है जिससे पत्तियों पर धब्बे और तुषार आते हैं। प्रारंभिक धब्बे सबसे पहले पौधों पर छोटे, काले घावों के रूप में देखा जाता है जो ज्यादातर पुरानी पत्तियों पर होते हैं। धब्बे बड़े हो जाते हैं और जब वे व्यास में एक-चौथाई इंच या उससे बड़े हो जाते हैं, तो रोगग्रस्त क्षेत्र के केंद्र में बैल की आंख के आकार के छल्ले देखे जा सकते हैं। धब्बों के आस-पास के ऊतक पीले पड़ सकते हैं। यदि इस समय उच्च तापमान और आर्द्रता होती है, तो अधिकांश पत्ते मर जाते हैं। तने पर घाव पत्तियों पर होने वाले घावों के समान होते हैं, कभी-कभी मिट्टी की रेखा के पास होने पर पौधे को घेर लेते हैं। लेट तुषार फफूंद द्वारा संक्रमित दिखने वाले पौधे अक्सर खेत में लगने पर मर जाते हैं।

**नियंत्रण:** प्रभावित पौधों के हिस्सों को हटाना और नष्ट करना। फसल चक्र अपनाने से रोग की घटनाओं को कम करने में मदद मिलती है। प्रभावी रोग नियंत्रण के लिए फसल पर डिफोलैटन (0.2%), डाइथेन एम-45 (0.2%) या बाविस्टिन (0.1%) का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

**पछेती झुलसा रोग ( फथोफथोरा इन्फेस्टान्स ):** पछेती झुलसा रोग तब होता है जब नमी की स्थिति लंबे समय तक हल्के तापमान के साथ मेल खाती है। यदि परिस्थितियां रोग के विकास के लिए आदर्श हैं, तो रोग का विकास तेजी से होता है जिससे गंभीर आर्थिक नुकसान होता है। पत्तियों पर उत्पन्न घाव पहले अनियमित, बल्कि बड़े, हरे-काले और पानी से लथपथ होते हैं। ये क्षेत्र तेजी से बढ़ते हैं, भूरे हो जाते हैं और आर्द्र परिस्थितियों में पत्तियों की निचली सतह या तने पर रोगग्रस्त क्षेत्र के किनारों के पास एक सफेद फफूंददार वृद्धि विकसित होती है। यह रोग आर्द्र परिस्थितियों में तेजी से फैलता है, ऊतकों के बड़े क्षेत्रों को जल्दी से नष्ट कर देता है। पत्तियों पर उत्पन्न घाव पहले अनियमित, बल्कि बड़े, हरे-काले और पानी से लथपथ होते हैं। ये क्षेत्र तेजी से बढ़ते हैं, भूरे हो जाते हैं और आर्द्र परिस्थितियों में पत्तियों की निचली सतह या तने पर रोगग्रस्त क्षेत्र के किनारों के पास एक सफेद फफूंददार वृद्धि विकसित होती है। यह रोग आर्द्र परिस्थितियों में तेजी से फैलता है, ऊतकों के बड़े क्षेत्रों को जल्दी से नष्ट कर देता है। फलों पर घाव बड़े, हरे से गहरे भूरे रंग के घावों के रूप में होते हैं, जो ज्यादातर फलों के ऊपरीआधे हिस्से पर होते हैं, लेकिन ये अन्य भागों पर भी हो सकते हैं। नमी की स्थिति में फलों पर सफेद फफूंद भी दिखाई दे सकती है। यह रोग फलों के साथ-साथ पौधे की पत्तियों पर भी हमला करता है। फलों पर लक्षण आमतौर पर फलों के कंधों पर शुरू होते हैं क्योंकि बीजाणु ऊपर से फलों पर उतरते हैं।

# बुंदेलखंड में टमाटर के फफूंद, जीवाणु और विषाणु जनित रोग और उनका प्रबंधन

**नियंत्रण:** नियंत्रण प्रथाओं में खेतों को घुमाना शामिल है ताकि आलू या टमाटर का पीछा न किया जाए, आलू के पास टमाटर लगाने से बचें, रोग मुक्त बीजों और रोपाई का उपयोग करें। कुछ निवारक उपायों को अपनाने से भी रोग को नियंत्रित किया जा सकता है। सबसे पहले, बीज सामग्री को रोग मुक्त क्षेत्र से प्राप्त किया जाना चाहिए। रोपण से पहले बीजों को थिरम (2-3 ग्राम/किग्रा बीज) से उपचारित किया जाना चाहिए। पौधों को रोपाई के 30 दिन बाद से 15 दिनों के अंतराल पर कैप्तापेल (2 ग्राम/लीटर पानी) या डायथेन एम 45 (2 ग्राम/किग्रा बीज) का छिड़काव करना चाहिए।



**उकठा ( फ्यूजेरियम ऑक्सिस्पोरम एफ. एसपी. लाइकोपर्सिसी ):** यह टमाटर की सबसे खराब बीमारियों में से एक है जो ज्यादातर नर्सरी में होती है। इस बीमारी के पहले लक्षण पत्तियों की नसों का साफ होना और क्लोरोसिस हैं। छोटी पत्तियां एक के बाद एक मर सकती हैं और कुछ दिनों में पूरी पत्तियां मुरझाकर मर सकती हैं। जल्द ही डंठल और पत्तियां मुरझाकर गिर जाती हैं। युवा पौधों में लक्षण नसों का साफ होना और डंठलों का गिरना है। खेत में पहले निचली पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और प्रभावित पत्तियां मुरझाकर मर जाती हैं। लक्षण बाद की पत्तियों में भी जारी रहते हैं। बाद की अवस्था में, संवहनी प्रणाली का रंग भूरा हो जाता है। पौधे बौने हो जाते हैं और मर जाते हैं।

**नियंत्रण:** उकठा से संक्रमित पौधों के लिए नर्सरी का नियमित रूप से निरीक्षण किया जाना चाहिए। प्रभावित पौधों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए। रोपण से पहले क्यारियों को

कार्बेन्डाजिम (0.1%) से भिगोना चाहिए और बीजों को थिरम (2.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर) से उपचारित करना चाहिए। अनाज जैसी गैर-मेजबान फसल के साथ फसल चक्रण रोग के संक्रमण को कम करने में मदद करता है।

### जीवाणु रोग

**जीवाणु विल्ट ( स्ट्यूडोमोनस सोलानेसीरम ):** यह टमाटर की फसल की सबसे गंभीर बीमारियों में से एक है। अपेक्षाकृत अधिक मिट्टी की नमी और मिट्टी का तापमान रोग के विकास को बढ़ावा देता है। जीवाणु विल्ट के विशिष्ट लक्षण सामान्य रूप से विकसित पौधों का तेजी से और पूरी तरह से मुरझाना है। मुरझाने से पहले निचली पत्तियां गिर सकती हैं। रोगजनक ज्यादातर संवहनी क्षेत्र तक ही सीमित रहता है। कुछ मामलों में, यह कॉर्टेक्स और पिथ पर आक्रमण कर सकता है और ऊतकों के पीले-भूरे रंग का रंग बिगाड़ सकता है। संक्रमित पौधे के हिस्सों को काटकर साफ पानी में डुबोने पर कटे हुए सिरों से जीवाणु रिसाव की एक सफेद धार निकलती हुई दिखाई देती है।

**नियंत्रण:** फसल चक्र, जैसे कि लोबिया-मक्का-गोभी, भिंडी-लोबिया-मक्का, मक्का-लोबिया-मक्का और रागी-अंडा टमाटर के जीवाणु विल्ट को कम करने में प्रभावी बताया गया है। स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (1 ग्राम/40 लीटर पानी) के साथ 30 मिनट के लिए पौध उपचार करने से विकास के प्रारंभिक चरणों में पौध की सुरक्षा होती है।

### विषाणुजनित रोग

**टमाटर मोजेक वायरस:** इस रोग की विशेषता पत्तियों पर हल्के और दिन के हरे रंग के धब्बे होते हैं, जो अक्सर धूप वाले दिनों में युवा पत्तियों के मुरझाने के साथ होते हैं, जब पौधे पहली बार संक्रमित होते हैं। प्रभावित पत्तियों के पत्ते आमतौर पर विकृत, सिक्कुड़े हुए और सामान्य से छोटे होते हैं। कभी-कभी पत्ते उभरे हुए हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप फर्नलीफ के लक्षण दिखाई देते हैं। प्रभावित पौधा बौना, हल्का हरा और पतला दिखाई देता है। वायरस कपड़ों, काम करने वाले मजदूरों के हाथों, संक्रमित पौधों को स्वस्थ पौधों से छूने, पौधों के मलबे और औजारों के संपर्क से फैलता है।

( शेष पृष्ठ 13 पर )

**इफको नैनो यूरिया एवं इफको नैनो डीएपी का तादा, उपज अधिक और लाभ ज्यादा**

**देश का आतिथ्याह, देश में बना, देश के किसानों को समर्पित**

**इफको नैनो यूरिया तरल**

500 मिली बोतल मात्र  
**₹ 225/-**

**इफको नैनो डीएपी तरल**

500 मिली बोतल मात्र  
**₹ 600/-**

एक बोतल एक बोरी पुरिफा के बराबर

उत्पन्न में वृद्धि

उच्च बीज गुणवत्ता में सुधार

सुदृढ़ एवं सहिष्णु

भंडारण एवं संरक्षण तारी में उन्नी

घर, बाग एवं न्याय प्रणाली में कमी

सभी प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त

उपयोग में आसान

फसल उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि

बीजों का अत्युत्पन्न वृद्धि

संरक्षण और परिवहन में आसानी

किसान को अनुपम दे

उच्च गुणवत्ता में सुधार करता है

एकलवर्ण और फूलों की लंबाई एवं पौधों की अधिक वृद्धि

**इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड**

सत्य बायाल्लय- ब्लॉक 2, तुलसी तल, पञ्जाब नगर, अहमदाबाद, गुजरात (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 1800 103 1967, वेबसाइट : [www.nanourea.in](http://www.nanourea.in)



- डॉ. ओ.पी. भारती • आर.सी. जाटव
  - डॉ. संध्या मुरे • डॉ. एस.के. तिवारी
  - डॉ. सर्वेश कुमार • डॉ. मुकेश कुमार बंकोलिया
  - जागृति बोरकर • पुष्पा झारिया
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि, कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा

**ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई** : रोगों और कीटों के प्रबंधन के लिए कम से कम 03 वर्ष में एक बार 20 से 30 से.मी. गहरी जुताई मई जून के महीने में करना चाहिए।

**मृदा उपचार** : ट्राइकोडरमा स्पीसीज 2 लीटर अथवा 4 कि.ग्रा. को 50 कि.ग्रा. की दर से पकी हुई गोबर की खाद में मिलाकर 10-15 दिन तक छायादार स्थान पर रखकर नमी की अवस्था में बुवाई पूर्व खेत में मिलाना चाहिए।

#### फफूंदनाशी एवं कीटनाशक से बीजोपचार

हरदा जिले में सोयाबीन, मूंग, उड़द और मक्का जैसी प्रमुख फसलें खरीफ मौसम में उगाई जाती हैं। फसल की प्रारंभिक अवस्था में फसल को रोग और कीटों से बचाव के साथ-साथ पौधों की उचित संख्या सुनिश्चित करने के लिए बीजोपचार अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए अनुशंसा हैं कि बीज को अनुशंसित पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक जैसे- एजोक्सीस्ट्रोबिन 2.5 प्रतिशत, थियोफैनेटमिथाइल 11.25 प्रतिशत, थियामेथोक्सम 25 प्रतिशत एफएस (10 मिली प्रति किग्रा बीज) अतिरिक्त कीटनाशकों से उपचार की आवश्यकता नहीं है अथवा पेनफ्लुफेनट्राइ फ्लोक्सीस्ट्रोबिन 38 एफ.एस. (1 मिली प्रति किग्रा बीज) अथवा थीरम 37.5 प्रतिशत, कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति किग्रा बीज) अथवा थीरम 25 प्रतिशत मैन्कोजेब 50 प्रतिशत डब्ल्यू.एस. (3 ग्राम प्रति किग्रा

#### (पृष्ठ 12 का शेष) बुंदेलखंड में टमाटर .....

**नियंत्रण**: रोग मुक्त स्वस्थ पौधों के बीजों को बोने के लिए चुना जाना चाहिए। बुवाई से एक दिन पहले ट्राइसोडियम फॉस्फेट (90 ग्राम/लीटर पानी) के घोल में बीजों को भिगोने से रोग का प्रकोप कम होता है। बीजों को अच्छी तरह से धोकर छाया में सुखाना चाहिए। नर्सरी में सभी संक्रमित पौधों को सावधानीपूर्वक हटाकर नष्ट कर देना चाहिए। वायरल रोग से संक्रमित पौधों को रोपाई के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। तम्बाकू, आलू, मिर्च, शिमला मिर्च, बैंगन आदि के अलावा अन्य फसलों के साथ फसल चक्र अपनाया जाना चाहिए।

**टमाटर लीफ कर्ल वायरस**: यह रोग व्हाइट फ्लाइ (बेमिसिया टैबैसी) द्वारा फैलता है। यह टमाटर की सबसे विनाशकारी बीमारियों में से एक है। लीफ कर्ल रोग में पौधों की गंभीर वृद्धि रुक जाती है, साथ ही पत्तियां नीचे की ओर मुड़ जाती हैं और सिकुड़ जाती हैं। नई उभरती हुई पत्तियां हल्के पीले रंग की दिखाई देती हैं और बाद में उनमें कर्लिंग के लक्षण भी दिखाई देते हैं। पुरानी पत्तियां चमड़े जैसी और भंगुर हो जाती हैं। नोड्स और इंटरनोड्स का आकार काफी कम हो जाता है। संक्रमित पौधे पीले दिखाई देते हैं और अधिक पार्श्व शाखाएं बनाते हैं जो झाड़ीनुमा दिखाई देती हैं। संक्रमित पौधे बौने रह जाते हैं।

**नियंत्रण**: प्रभावित पौधों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए। इस रोग को फैलाने वाले वायरस को आश्रय देने वाले वैकल्पिक या संपार्श्विक मेजबानों को रोग के प्रसार को कम करने के लिए निराई या मिट्टी चढ़ाने के समय हटादिया जाता है।

व्हाइट फ्लाइ की आबादी की जांच करके रोग के प्रकोप को कम किया जा सकता है। नर्सरी बेड में बीज बोने के समय फुराडान (1 किग्रा ए.आई./हेक्टेयर) जैसे दानेदार कीटनाशक का मिट्टी में छिड़काव व्हाइट फ्लाइ की आबादी को नियंत्रित करता है। रोपाई के एक सप्ताह बाद फ्युराडान (1.5 किग्रा ए.आई./हेक्टेयर) की एक और खुराक दी जाती है। 10 दिनों के अंतराल पर डाइमिथोएट (0.05%) या मोनोक्रोटोफॉस (0.05%) के साथ 2-3 पत्तियों पर छिड़काव करने से सफेद मक्खी की आबादी नियंत्रित होती है। बॉर्डर या बैरियर फसल के इस्तेमाल जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं से रोग के प्रसार को कम किया जा सकता है। मक्का, ज्वार, बाजरा जैसी बैरियर फसलें फसल को टी.एल.सी.वी. संक्रमण से बचाने के लिए अच्छी होती हैं।

# खरीफ बुआई से पहले की तैयारी



बीज) अथवा थियोफैनेट मिथाइल 45 प्रतिशत पायराक्लोस्ट्रोबिन 5 प्रतिशत एफ.एस. (3 मिली प्रति किग्रा बीज) से उपचारितकर इसे कुछ समय तक छाया में सुखाए तत्पश्चात

अनुशंसित कीटनाशक जैसे- थियामेथोक्सम 30 एफ.एस. (10 मिली प्रति किलो बीज) या इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.एस. (1.25 मिली/किलो बीज) से उपचारित करना चाहिए

#### जैविक कल्चर से बीजोपचार

सोयाबीन की बोवनी करते समय बीज को जैविक कल्चर ब्रेडिरायबियम+पी.एस.एम. प्रत्येक की 5 ग्राम प्रति किग्रा बीजदर से करें। रासायनिक कवकनाशी के विकल्प के रूप में किसानों के पास जैव-कवकनाशी यानी ट्राइकोडरमा विरडी (10 ग्राम प्रति किलो बीज) का उपयोग करने का भी विकल्प है जिसे जैविक कल्चर के साथ मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।

## बीज दमदार- दे भरपूर पैदावार...



## यही है सच्चा सोना

संशोधित सोयाबीन बीज

# ईगल-81

ईगल सीड्स के अन्य सोयाबीन उत्पाद



ईगल-111

ईगल-71

त्रिशिका

एक्सलेंट



नई पेशकश



ईगल सीड्स एण्ड बायोटेक लिमिटेड  
अधिक जानकारी के लिए संपर्क : 70240 25555

(पृष्ठ 11 का शेष) खरीफ फसलों की उन्नतशील प्रजातियों...  
सुगंधित धान की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
पूसा-1847	2022	105-110	50-55
पूसा-1885	2022	125-130	55-60
पूसा-1886	2022	140-145	55-60
पूसा-1692	2020	105-110	50-55
पूसा-1718	2017	135-140	45-50
पूसा-1637	2016	125-130	50-55
पूसा-1728	2016	140-145	50-55
पूसा-1509	2013	105-110	45-50
पूसा सुगंधा-6 (पूसा-1401)	2008	145-150	50-55
पी.बी.-1460 उन्नत बासमती-1)	2007	135-140	55-60
पूसा सुगंधा-5 (पूसा-2511)	2005	120-125	55-60
पूसा सुगंधा-4 (पी.बी.-1121)	2003	140-145	40-45
पूसा सुगंधा-2	2001	120-125	50-55
पूसा सुगंधा-3	2001	120-125	55-60
पी.बी.-1 (पूसा बासमती-1)	1989	130-135	40-50

**पूसा-1637** : पूसा बासमती -1 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि-125-130 दिन उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी। **पूसा-1847** : पूसा बासमती -1509 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 105-110 दिन अर्द्धबोनी एवं जल्दी पकने वाली प्रजाति। उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी। **पूसा-1885** : पूसा बासमती -1121 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 125-130 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी। **पूसा-1886** : पूसा बासमती - 6 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 140-145 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।

**उड़द की उन्नत किस्में**

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
पी.यू.-31	2008	75-80	12-13
पी.यू.-40	2008	70-75	14-15
प्रताप उड़द-1	2012	70-75	13-15
आई.पी.यू.-11-02	2019	70-80	8-10
आई.पी.यू.-13-01	2020	70-80	9-10
आई.पी.यू.-10-26	2020	70-80	8-10

**अरहर की उन्नत किस्में**

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
आई.पी.ए.-15-06	2021	140-145	21-25
जी.आर.जी.-152	2020	160-165	14-15
राजेश्वरी	2012	135-150	18-20
पूसा-16	2018	120	18-20

**तिल की उन्नत किस्में**

किस्में	फसल अवधि (दिन)	उत्पादन (क्विं./हे.)	विशेषताएं
टी.के.जे.- 308	80-85	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।
जे.टी.-11	80-85	6-7	● ग्रीष्मकाल हेतु उपयुक्त।
टी.जे.एम.-8	80-85	6-7	● पर्ण अंगमारी रोग अवरोधी।
टी.के.जे.-55	75-80	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।

## खरीफ फसलों के लिये वैज्ञानिकों की तकनीकी सलाह

**टीकमगढ़।** कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा किसानों को खरीफ फसलों की बुवाई के समय उन्नत तकनीक अपनाने की सलाह दी गयी। फसल को फफूंदजनित बीमारियों से बचाने के लिए जैविक फफूंदनाशक दवा ट्राईकोडर्मा विरिडी 10 मिली या रासायनिक दवा विटावैक्स पॉवर 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करना चाहिए। खरीफ फसलों के अधिक उत्पादन के लिए फसलों की बुवाई कतारों में करना चाहिए और फसलों में मिट्टी परीक्षण उपरान्त अनुसंधित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। दलहनी और तिलहनी फसलों में फास्फोरस की पूर्ति के लिए डीएपी की जगह सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करना चाहिए जिससे फसलों

को फास्फोरस के साथ सल्फर और कैल्शियम भी प्राप्त हो जाता है। फसलों में कीट-व्याधियों से बचाव के लिए म्यूरेट ऑफ पोटैश का 15-20 किग्रा प्रति एकड़ का प्रयोग करना चाहिए। किसान भाईयों को एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रति वर्ष प्रत्येक खेत में फसलें अदल-बदल कर बोना चाहिए जिससे फसलों की पैदावार भी अच्छी होगी और कीट-व्याधियों की समस्या भी नहीं होगी। खरीफ की फसलों में नींदा की मुख्य समस्या होती है। यदि फसलों की समय पर निंदाई-गुड़ाई नहीं की गयी तो उत्पादन काफी कम हो जाता है इसलिए खरीफ फसलों में दो बार निंदाई-गुड़ाई करना चाहिए। एक बीज बुवाई के 15-25 दिन में दूसरी बार 35-40 दिन में करना अति आवश्यक है। नींदा जितने दिन फसल के साथ रहेगा उतना ही फसल का भोजन खाकर फसल को कमजोर और उत्पादन को प्रभावित करेगा।

### कोडिया में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

**टीकमगढ़।** ग्राम कोडिया जिला टीकमगढ़ में कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा जलवायु समुत्थानुशील कृषि में राष्ट्रीय नवाचार परियोजना के माध्यम से जिले के लिए कृषि जलवायु समुत्थानुशील तकनीकियों कार्य का वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि और पशुपालन पर जलवायु परिवर्तन के कई प्रभाव हो रहे हैं। बुंदेलखंड कृषि पशुपालन क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में वर्षा, गर्मी और सर्दी के मौसम में बहुत बदलाव देखे गए हैं। इन सभी समस्याओं पर कृषि में राष्ट्रीय नवाचार के माध्यम से कृषि तकनीकियों का परीक्षण वैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहा है ताकि भविष्य के लिए उन तकनीकियों को जिला स्तर पर स्थापित किया जा सके। विश्व कार्यक्रम के दौरान किसानों को आगामी खरीफ में मूंगफली, उर्द, तिल और सोयाबीन की वर्षा एवं जल उपलब्धता के आधार पर चयन करने की सलाह दी गई साथ ही मिट्टी परीक्षण के लिए खेतों में नमूना लेना बताया गया जिससे खेतों में संतुलित मात्रा में खाद और उर्वरक का उपयोग कर सकें। इस कार्यक्रम में डॉ. बी.एस. किरार प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. आर.के. प्रजापति निगरा परियोजना प्रभारी डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह, ग्रामीण कृषक एवं कृषक महिलाएं छात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जयपाल छिगारहा द्वारा किया गया।

### वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,  
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास  
होशंगाबाद रोड, भोपाल ( म.प्र. )  
फोन : ( 0755 ) 4233824  
मो. : 9827352535, 9425013875,  
9300754675, 9826686078

**अमरावत/सीहोर जिले में**

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

**श्री योगेश ठाकुर**  
मे. देवराज ट्रेडर्स  
बस स्टैंड के पास, अमरावतकला जिला - रायसेन ( म.प्र. )

**मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स**  
( कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान )

- औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पाटर्स ● कीटनाशक
- जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

**वितरक -** ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सर्टिड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)  
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

**अर्जुन इण्डस्ट्रीज**

AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES

समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता

- ट्राली ● टैंकर ● कल्टीवेटर ● बोनी मशीन ● पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरलैंड, बायपाल चौक, वैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)  
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

# हीट वेव में रोपित पौधों के जिंदा रहने की संभावना बहुत कम

**डे** दू-दो महीने की चुनावी कवायद के बाद देश की सरकार बनने की आघापी के दरमियां 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस कब दबे पांव आया और निकल लिया, यह आम अवाम को तो पता भी नहीं चला। किंतु सोशल मीडिया व दूसरे दिन के समाचार पत्रों से पता चला कि देश भर में विभिन्न संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में हीट वेव में भी जबरदस्त वृक्षारोपण कार्य संपन्न हुआ है।

हम स्वयं पिछले 30 वर्षों से पेड़ लगा रहे हैं पर आज तक यह नहीं समझ पाये कि हमारे देश के किस विद्वान के दिमाग की उपज थी कि विश्व पर्यावरण दिवस पांच जून के दिन ही वृक्षारोपण किए जाएं। जबकि विशेषज्ञों का मत है कि असिंचित क्षेत्रों में वृक्षारोपण का आदर्श समय जुलाई-अगस्त होना चाहिए। अब चूंकि यह रिवाज बन गया है इसलिए शासकीय कार्यालयों में, स्कूलों में अधिकारीगण, नेता गण, शिक्षक, बच्चे सभी हर 5 जून को वृक्षारोपण कर रहे हैं। वन विभाग इसमें सबसे आगे है। जबकि देश के ज्यादातर हिस्सों में अभी भी नौतपा का ताप उतरा नहीं है। कई स्थानों पर लू चल रही है। लू से बचने के तमाम तरीकों की जानकारी रखते हुए पढ़े-लिखे जानकार व्यक्ति भी तमाम डॉक्टर एवं दवाइयों के रहते भी मौत के मुंह में समा रहे हैं, ऐसी हालात में 5 जून को लगाए गए ये नन्हें पौधे 48 घंटे भी जिंदा रह पाएंगे, यह कहना कठिन है।

यह स्थापित तथ्य है कि भारत में मानसून आमतौर पर 15 जून के पश्चात ही सक्रिय हो पाता है। पर पर्यावरण दिवस के नाम पर सरकारी वृक्षारोपण की खानापूर्ति 5 जून को ही होना अनिवार्य है। इस कार्य में हमारा वन विभाग हर साल सबको पीछे छोड़ देता है। स्वनामधन्य वन विभाग को इसमें सबसे आगे होना भी चाहिए। क्योंकि देश के हजारों साल पुराने व जैव विविधता से समृद्ध लगभग सभी

## पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण या पौधों की हत्या?

जंगलों को तो इन्होंने काट कर, कटवा कर, बेंच बांचकर फूंक-ताप लिया है। इनकी सफाई पसंदगी का यह आलम है कि जंगलों में टूट तक नहीं छोड़ा गया है। इधर कुछेक दशकों से वृक्षारोपण नामक नए चारागाह को जंगलों की रक्षा के नाम पर बनी ये बाड़ें निर्द्वंद्व भाव से चट करती जा रही है। हर साल नवीन वृक्षारोपण, पुराने वनों के सुधार, पड़ती भूमि संरक्षण आदि तरह-तरह की योजनाएं



**डॉ. राजाराम त्रिपाठी**

(पर्यावरण मामले की जानकार अंतरराष्ट्रीय हरित योद्धा अवार्डी)  
राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय किसान महासंघ (आईफा)

बनाकर सरकार से जनता के पैसे लो, वृक्षारोपण की नौटंकी करो, फिर भगवान से दुआ करो कि सारे पौधे मर जाएं। अगले साल फिर योजना बनाओ, फिर पैसे लो, फिर वृक्षारोपण की नौटंकी करो।

अब तक सारे महानुभाव वृक्षारोपण की फोटो खिंचवा कर सोशल मीडिया पर चेंप चुके हैं, बस किसी तरह समाचार में यह छप जाए कि अमुक महामहिम ने पौधा रोपकर देश के पर्यावरण पर और देश पर भारी भरकम एहसान कर दिया है। अब आगे पौधा जाने और पौधे की किस्मत जाने। हमारे देश में सरकारी वृक्षारोपण की हालत यह है कि आजादी के बाद वृक्षारोपण कर जितने पौधे लगाए गए उनमें से 50 प्रतिशत भी अगर जिंदा रह जाते तो यह देश विश्व का सबसे हरा भरा देश होता और शायद मनुष्य को खड़े रहने के लिए भी जगह नहीं मिलती। पर हमारे नीति निर्माता नेतागण, अधिकारीगण इतने दूरदर्शी हैं कि वो जानबूझकर 5 जून को ही वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न कर डालते हैं ताकि पौधा एक

हफ्ता से ज्यादा जिंदा ही ना रह पाए, यानी कि ना रहे बांस न बजे बांसुरी। इस तरह ये उद्योगपतियों के लिए, कॉलोनाइजर के लिए जमीन बचाकर ये देश का भारी कल्याण कर रहे हैं।

1972 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा स्थापित डब्ल्यूईडी ने पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने का निश्चय लिया। 1973 से हम इसे

दशकों की सतत नौटंकी के बाद भी प्रति व्यक्ति मात्र 28 पेड़ बचे हैं। विश्व में सबसे गरीब देशों में शुमार किए जाने वाला देश इथोपिया भी हरित संपदा के मामले में प्रति व्यक्ति 143 पेड़ों के साथ हमसे 5 गुना ज्यादा



समृद्ध है। इस पर्यावरण दिवस की खानापूर्ति करने के लिए हमने भी एक और पीपल का पेड़ अपने इथनो मेडिको हर्बल गार्डन में लगाया है। पीपल ही क्यों? क्योंकि श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां यानी कि पेड़ों में मैं पीपल हूँ।

खैर हमने ने जो पीपल का पौधा आज रोपा है, वह तो हम हर हाल में जिंदा रख लेंगे पर क्या आप सभी महानुभाव जिन्होंने इस 5 जून को पौधों का रोपण किया है, क्या ईमानदारी से वादा करेंगे कि आपने इस बार जितने पौधे रोपे हैं उन्हें हर हाल में आप जिंदा रखेंगे? अगर आपका जवाब ईमानदारी से हां में है तो मेरी ओर से आप सात तोपों की सलामी कुबूल करें। समाचार पत्रों में जब आप 5 जून पर्यावरण दिवस और माननीयों के फोटो देखें तो एक बार सोचिएगा जरूर कि फोटो में दिख रहा नन्हा-मुन्ना पौधा कम से कम अगले पर्यावरण दिवस तक जिंदा रहेगा अथवा नहीं इसकी गारंटी कौन देगा? सोचिएगा जरूर।

## कीट संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

**जबलपुर।** जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कीट विज्ञान विभाग द्वारा मध्य क्षेत्र क्षेत्रीय केंद्र, भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, जबलपुर के सहयोग से कीटों के संग्रह, संरक्षण और पहचान पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता, अधिष्ठाता कृषि संकाय, डॉ. धीरेन्द्र खरे ने की। इस दौरान वक्ताओं ने कीटों की पहचान और संरक्षण के महत्व पर अपने विचार साझा किये।

वक्ताओं ने कौशल जैवविविधता को समझने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया। कार्यशाला में कीट विज्ञान विभाग के 34 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। जिनमें से 26 एम.एस.सी. और 8 पी.एच.डी. शोधार्थी रहे। डॉ. पी.एस. भटनागर ने कार्यशाला में प्रदान की गई महत्वपूर्ण जानकारी एवं कौशल के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने जैव विविधता अध्ययन और पर्यावरण निगरानी में इन कौशलों की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. एस.बी. दास एवं आभार प्रदर्शन डॉ. अमित कुमार शर्मा ने किया।

सभी फसलों के लिए उपयोगी

**देवपुत्र**

अमृत (डीकम्पोस्ट)  
उत्कृष्ट प्रमाणित बीज  
कार्बनिक खाद मिश्रण

सिटी कम्पोस्ट वर्मी कम्पोस्ट  
ऑर्गेनिक मेन्यूअर  
प्रॉम खाद

**गंगा एवं जय जवान**

NPK मिक्स फर्टिलाइजर

12:32:06 20:20:10  
08:32:08 15:15:7½

**रत्नम**

जिंक सल्फेट 21%  
सिंगल सुपर फॉस्फेट  
(पावडर एवं दानेदार)

NPK मिक्स फर्टिलाइजर

12:32:06 20:20:10  
08:32:08 15:15:7½

सभी सहकारी समितियों एवं विपणन संघ केन्द्रों पर उपलब्ध

दिव्यज्योति एग्रीटेक प्रा. लि.

चातक एगो (इं) प्रायवेट लिमिटेड

बालाजी फॉस्फेट्स प्रायवेट लिमिटेड

305, उत्तराख एवेन्यू, 12/5, उषागंज (जावरा कम्पाउण्ड), इन्दौर (म.प्र.)  
फोन: 0731-4064501, 4067471, नोराइल: 98272-47057, 98270-90267, 94251-01385





# मप्र में 148 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई प्रस्तावित

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। इस साल सामान्य बारिश की भविष्यवाणी को देखते हुये किसान कल्याण तथा कृषि विकास संचालनालय ने प्रदेश में 148.68 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई का लक्ष्य निर्धारित किया है। सबसे अधिक 55.74 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बुवाई प्रस्तावित है जो पिछले साल की बुवाई से 3 लाख हेक्टेयर अधिक है। धान की बुवाई पिछले साल की बुवाई के समान 34.67 लाख हेक्टेयर में किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। मक्का की बुवाई 16.75

## 55 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बुवाई का लक्ष्य

लाख हेक्टेयर में की जायेगी जो लगभग पिछले साल की बुवाई के बराबर है। कपास हर वर्ष की भांति इस साल भी 6.23 लाख हेक्टेयर में प्रस्तावित है। प्रमुख दलहनी फसल अरहर की बुवाई 3.95 लाख हेक्टेयर में करने का कार्यक्रम बनाया गया है। उड़द की बुवाई 12.59 लाख हेक्टेयर एवं मूंग 1.51 लाख हेक्टेयर में की जायेगी। तिलहनी फसल तिल की बुवाई का लक्ष्य 4.28 लाख हेक्टेयर रखा गया है। ज्वार



1.52 लाख हेक्टेयर एवं बाजरा 4.07 लाख हेक्टेयर में बोया जायेगा। कोदो-कुटकी की बुवाई का लक्ष्य 1.87 लाख हेक्टेयर में रखा गया है। मूंगफली 51 हजार हेक्टेयर में बोयी जायेगी। कृषि विभाग से प्राप्त जानकारी अनुसार प्रदेश में खाद, बीज एवं अन्य कृषि आदानों का पर्याप्त भंडारण किया गया है। किसान भाई

खरीफ फसलों की बुवाई से पहले की तैयारी में जुट गये हैं। मानसून पूर्व की बारिश भी प्रदेश के कई हिस्सों में शुरू हो चुकी है। अगले हफ्ते तक प्रदेश के कई क्षेत्रों में मानसून का आमगन हो जायेगा। मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में 20 जून तक मानसून का आगमन हो जाएगा। इस बार दक्षिण-पश्चिम मानसून बालाघाट-डिंडौरी के रास्ते मध्यप्रदेश में प्रवेश करेगा। मानसून महाराष्ट्र के कई इलाकों में पहुंच चुका है।

## प्रमुख खरीफ फसलों का बुवाई लक्ष्य

फसल	लक्ष्य 2024
सोयाबीन	55.74
धान	34.67
मक्का	16.75
कपास	6.23
अरहर	3.95
मूंग	1.51
उड़द	12.59
तिल	4.28
मूंगफली	.51
ज्वार	1.52
बाजरा	4.07
कोदो-कुटकी	1.87
<b>खरीफ योग</b>	<b>148.68</b>

(क्षेत्र-लाख हेक्टेयर में)

## तिलहनी फसलों की उत्पादकता वृद्धि की सलाह



टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह, जयपाल छिगारहा एवं हंसनाथ खान द्वारा किसानों को बताया कि खरीफ मौसम की प्रमुख तिलहनी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में नई किस्म का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। किसानों को 3 वर्ष में बीज बदल देना चाहिए। वैज्ञानिकों द्वारा फसलों की नई किस्में अधिक उत्पादन, कीट व्याधियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता वाली के साथ-साथ उच्च पोषक तत्वों का भी समावेश किया जा रहा है। टीकमगढ़ जिले में प्रतिवर्ष मूंगफली का क्षेत्रफल बढ़ रहा है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु केंद्र सरकार द्वारा खाने वाले तेल फसलों पर विशेष परियोजना आदर्श तिलहन के नाम से शुरू की गई है। परियोजना के माध्यम से जिले की प्रमुख तिलहन फसलों में मूंगफली, तिल एवं सरसों की उत्पादकता बढ़ाने हेतु किसानों को प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण के माध्यम से उन्नत तकनीक एवं नई किस्में पहचाने का कार्य किया जाएगा। मूंगफली की नई किस्में जी.आई.जी.-32, टी.सी.जी.एच.-1694 लीपाक्षी, सोयाबीन की नई किस्में में जे.एस.-20-116, जे.एस.-2094, जे.एस.-2098, जे.एस.-2069, जे.एस.-2034, राज सोया-18, आर.वी.एस.-24, एवं तिल की किस्म जीटी-6 आदि किस्मों के लिए राष्ट्रीय बीज निगम निवाड़ी से संपर्क कर सकते हैं।

किसान भाई अधिक उत्पादन हेतु अनुसंशित बीज दर एवं फफूंदनाशक दवा से बीज उपचार कर ही बुवाई करें एवं उर्वरक का प्रयोग मिट्टी परीक्षण के आधार पर अनुसंशित मात्रा का प्रयोग करें। तिलहनी फसलों में सल्फर एवं पोटेशियम उर्वरकों के उपयोग का विशेष ध्यान दें। खरीफ फसलों में नींदा की मुख्य समस्या रहती है इसलिए प्रारंभिक अवस्था में फसल को नींदा मुक्त रखने हेतु बुवाई के 15-25 दिन में पहली निराई-गुड़ाई और 35-40 दिन में दूसरी निराई-गुड़ाई करना चाहिए। खरीफ की फसलों को अधिक वर्षा के जल से बचाने के लिए खेत में जल निकास की नालियां अवश्य बनाना चाहिए।

## खंडवा में इफको किसान सभा का आयोजन

खंडवा। नैनो क्लस्टर हेतु चयनित बहुउद्देशीय प्राथमिक सहकारी साख समिति बड़गांव गुर्जर, जिला खंडवा में किसान सभा का आयोजन किया गया। सभा में आर.के.एस. राठौर उप महाप्रबंधक (विपणन), राज्य कार्यालय भोपाल द्वारा नैनो यूरिया प्लस तथा नैनो डीएपी के विषय में किसानों को जानकारी दी गयी। किसानों द्वारा विगत वर्षों में नैनो यूरिया के उपयोग के बारे में अपने अनुभव साझा किए गए तथा श्री राठौर द्वारा इनके उपयोग करने के दौरान में होने वाली त्रुटियों



के निराकरण संबंधित सुझाव दिये गए। साथ ही इफको की नैनो क्लस्टर हेतु विभिन्न योजनाओं, अनुदानित दरों पर नैनो उर्वरकों की उपलब्धता एवं ड्रोन द्वारा छिड़काव के बारे में चर्चा की गयी। कार्यक्रम में इफको की आम सभा सदस्य अनिल जोशी ने किसानों के इफको सागरिका और जल विलेय उर्वरकों की उपलब्धता के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन संतोष रघुवंशी उप क्षेत्र प्रबंधक इफको खंडवा द्वारा किया गया।

### अन्नदाता का साथ किसान का विकास

**अन्नदाता**

जिकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)

सल्फर और जिंक की ताकत

ग्यावा उपज और कम लागत

**अन्नदाता जिबो**

अन्नदाता जिबो का साथ

मिट्टी ज्ञानदार और उपज भी ज्यादा

**ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज**

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनागर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (स्जीवा एवं बण्डा - सागर)

## टेंपर की कहानी- किसान की जुबानी शनमुखा से मिला शानदार परिणाम



**नसरूल्लागंज।** ग्राम जोगुला, (नसरूल्लागंज) निवासी कृषक ने बताया कि शनमुखा एग्रीटेक लिमिटेड के उत्पादों से बहुत शानदार रिजल्ट प्राप्त किया और इससे हमारी फसलों को बेहद लाभ हुआ। हमारे यहां सभी किसानों को शनमुखा के उत्पादों से लाभ मिला।

कंपनी के एमडीओ महीन वर्मा ने किसानों को कंपनी के उत्पादों की जानकारी देते हुये बताया कि वे कंपनी के उत्पादों का उपयोग कर

अपनी लागत को कम कर सकते हैं और अधिक अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। उन्होंने बताया कि जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

## आरएनटीयू में विश्व पर्यावरण दिवस आयोजित

**भोपाल।** रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के लाइफ साइंस विभाग और विज्ञान संचार केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखा प्रतिरोध क्षमता रही। इस मौके विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनी कांत, प्रो. टी. रवि किरण बतौर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनी कांत ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने और इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। वहीं प्रो. टी. रवि किरण ने बताया कि मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बहुत बड़ा संकट है। यह लोगों को प्रभावित करता है। चूंकि मानव जीवन को कई आवश्यक गतिविधियों के लिए उपजाऊ और उत्पादक भूमि की आवश्यकता होती है। इसलिए मरुस्थलीकरण सतत विकास के लिए एक बड़ी बाधा है। उन्होंने सभी से खूब



पौधे लगाने का आह्वान किया।

इससे पूर्व पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण और भूमि पुनर्स्थापन के महत्व को रेखांकित करने वाले पोस्टर प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। विश्वविद्यालय के लाइफ साइंस विभाग और विज्ञान संचार केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में इस आयोजन ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जन-जन तक

पहुंचाने और छात्रों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और सक्रियता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। इस अवसर पर विज्ञान संचार केंद्र के निदेशक डॉ. प्रबाल रॉय, विज्ञान संकाय की डीन डॉ. पूर्वी भारद्वाज, डॉ. अंकित अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, लाइफ साइंस के साथ अन्य प्राध्यापकगण मौजूद थे।

### Announcing



**21-22-23-24  
February 2025**

Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi  
Vishwavidyalaya (RVSKVV) Campus,  
Gwalior, Madhya Pradesh, India

International Exhibition & Conference on  
**Agriculture, Horticulture & Dairy  
Technology**

**LARGEST AND  
MOST SUCCESSFUL**  
International  
Agriculture Exhibition of  
**Madhya  
Pradesh**

**Our Milestones**

Event Organized : <b>90</b>	Exhibitors : <b>6500</b>
Exhibition Organizing Expertise : <b>5+</b> Countries	Industry Cluster : <b>10</b>

**BOOK YOUR STALL NOW**

**For Stall Booking**  
+91 75677 02022  
+91 75677 02023  
agri@farmtechindia.in  
www.farmtechindia.in



SCAN ME

## सदस्यता फार्म

# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राणिक मासिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,  
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 ( म.प्र. ) फोन- 0755 - 4233824  
मो. : 9425013075, 9827352535, 9300754675  
E-mail:krishak\_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम..... पोस्ट..... तहसील .....

जिला.....राज्य.....पिन कोड

दूरभाष/कार्वा. .... घर ..... मोबा. : .....

### सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत " की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूप ( अंकों में )..... ( शब्दों में ).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर ..... एवं संस्था सील

उम्मीद से  
ज्यादा का वादा



**Chetak DI 65 | 50 HP**

### विशेषताएं

- पावर स्टेयरिंग
- कांस्टेंट मेग्न गियर
- 4088 CC का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 14.9x28



खेती और ढुलाई में  
सबसे बड़ा आलराउंडर



**पावर दमदार**  
**माइलेज शानदार**

**DI 350 NG | 40 HP**

### विशेषताएं

- पावर स्टेयरिंग
- साईड शिफ्टिंग गियर
- 2858 CC का दमदार इंजन
- स्टील बेस 1970 MM
- ड्यूल क्लच
- एडवांस हाईड्रोलिक
- इंजन टॉर्क 175 NM



**ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध**



कस्टमर हेल्प लाइन  
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - **संजय कुमार : 9540943883**

**ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.**

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

# नया स्वराज मेरा SWARAJ

CELEBRATING  
**50**  
YEARS  
मेरा  
**SWARAJ**  
TRACTORS



परफॉर्मेंस

कमफर्ट

पावर

मजबूती

स्टाइल

**6** YEAR  
WARRANTY

स्वराज ट्रैक्टर्स की अधिक जानकारी के लिए  
**1800 425 0735** (टोल फ्री नंबर) पर सम्पर्क करें.